A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 30 अप्रैल, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 232 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

चमकीला : मटमैला समाज विदा कर पाएगा पॉपुलर गायक की त्रासद गाथा?

गीताश्री

पंजाब के गायक अमर सिंह चमकीला ऊर्फ धनीराम के जीवन पर बनी बायोपिक 'चमकीला' (चमकीला की भूमिका में दिलजीत दोसांझ) पर अब तक इतना लिखा जा चुका है कि मामला अब बहसों और विमर्शों से परे जा चुका है। फिल्म को लेकर समाज दो भागों में बंट चुका है। एक धड़ा इसे खराब बताने पर तुला है तो दूसरा पक्ष इसे महान बता रहा है। सबके पास अपने तर्क-कुतर्क हैं। उसे इतिहास के अंधेरे कोने में ढकेलने की पूरी तैयारी है इस बहसबाज समाज की, जो एक सिनेमा को अलग-अलग कसौटी पर कसता है, सिर्फ सिनेमा को सिनेमा की तरह नहीं देखता। हमें सिनेमा को उसके टूल्स से समझना होगा। न कि उसे सवालों के घेर में लेकर उससे जिरह प्रारंभ कर दें। दिक्कत तब आती है जब हम सिनेमा को 'विजुअल' माध्यम की तरह न देख कर उसे 'टेक्सचुअल' नजरिये से देखने लगते हैं।

यह सच है कि हर कला सवाल उठाती है। अपने तमाम सम्मोहनों के बावजूद सिनेमा बेहद असरकारक माध्यम है जो तत्क्षण विचलित कर सकता है। 'चमकीला' ने क्या किया। यही तो किया कि उसे देखते ही समूचा समाज उद्वेलित हो उठा। उद्वेलन ठीक है, उसके साथ न्याय जुड़ा होना चाहिए और उस पर एक सार्थक बहस हो।

'चमकीला' का प्रचार मुफ्त में इतना हुआ जितना फिल्मकार किसी एजेंसी को हायर करके भी नहीं पा सकता। महान फिल्मकार तारकोवस्की का कथन याद आता है - 'सिनेमा एक उच्च स्तरीय कला है। इस कला का उद्देश्य मनुष्य की आत्मा को अच्छाई के लिए तैयार करना है। फ़िल्में बनाने का मेरा मक़सद यह है कि लोगों को जीने में कुछ मदद कर सकूं।' 'एनिमल' जैसी फिल्में इस कसौटी पर विफल हैं और 'चमकीला' सफल। इस पर विचार करेंगे।

चमकीला कौन है। दलित समाज का एक गरीब लड़का जो गायक बनने के सपने देखता है। दलित बच्चा समाज की नंगई देख रहा है। उसकी आंखों से सामने समाज अश्लील, अनैतिक रूप में मौजूद है। चमकीला ने अपने समाज के आसपास वही सब देखा और उसको गानों में पिरो दिया। बचपन की स्मृतियां सबसे मजबूत होती हैं। बच्चे के भीतर तमाम उत्सुकताएं हैं, जिसका जवाब आज के बच्चों को सेक्स एजुकेशन के कारण मिल जाता है, सत्तर-अस्सी के दशक में ऐसा संभव नहीं था। सवाल उसके मन में कुंठा के रूप में, जिज्ञासा के रूप में जमा होते रहते हैं। फिर भी देखता है कि समाज को कैसे गाने पसंद हैं। यहां उसका चयन नहीं, समाज की मांग उसके ऊपर हावी है। आखिर जब कला व्यवसाय बनती है तो पब्लिक डिमांड की ओर ध्यान देती है।

सवाल यहीं से शुरू होते हैं। यह फिल्म समाज के दोगले रवैये, वर्ग विभाजन, पूंजी-विभाजन की ओर संकेत करती है। इम्तियाज ने कोई महानायक नहीं खड़ा किया है। ऐसा करना होता तो चमकीला के चरित्र के ग्रे शेड्स को नहीं दिखाते। यहां चमकीला दर्शकों की नजर में छोटा होता है। लेकिन सवाल यहाँ ये है कि उसके सामने कोई और रास्ता नहीं बचा था। अपनी गायन जोड़ी बचाने के लिए उसे गायिका अमरजोत कौर (परिणीति चोपड़ा) से विवाह करना पड़ा।

यहां चमकीला उस स्वार्थी पुरुष की तरह नजर आता है जो अपनी महत्वाकांक्षा के लिए दो दो स्त्रियों के जीवन और भावनाओं से खेल जाता है। वह दूसरी पत्नी अमरजोत को भी अपनी पहली शादी के बारे में नहीं बताता है। उसे मालूम है कि बताते ही जोड़ी बिखर जाएगी। इसके लिए कदापि तैयार न था। वह गायन का इतना दीवाना था कि इसके लिए वह कोई भी कुर्बानी दे सकता था, जो अंत में जान देकर की।

अब बात अश्लील गानों की। जितना फिल्म में हमने रोमन सब टाइटिल के साथ देखा, सुना, वे मामूली रूप से बोल्ड थीं। हो सकता है, और हों। इससे ज्यादा गंदे गीत तो हमारे यहां शादी विवाह के अवसरों पर गाए जाते हैं, उन्हें औरतें गाती हैं। इतने गंदे कि सुनने वाले के कान से धुंआ निकलने लगे। लेकिन गाने वाली स्त्रियों की आवाज जरा भी नहीं कांपती, न ठिठकती है। ये लोक जीवन का अनिवार्य पक्ष है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इम्तियाज लोक जीवन के इस पक्ष को बखूबी जानते हैं और उसका इस्तेमाल फिल्म में करते हैं। एक दृश्य है, अनेक स्त्रियां मौजूद हैं, वहां एक बूढ़ी स्त्री कहती है- 'अश्लीलता तो सबके अंदर होती है, सब मर्द औरतों के बारे में लगभग एक जैसा सोचते हैं, बस फर्क इतना है कि चमकीला कह देता है, अपने गानों में और बाकी लोग नहीं कह पाते।' एक स्त्री के मुंह से ये कहलवा कर निर्देशक ने समाज की, चमकीला की सारी हकीकत बयान कर दी। उसी दृश्य में चमकीला को सुनने के लिए लड़कियां, स्त्रियां घर के छतों पर खड़ी हो जाती हैं जिससे सारे छज्जे टूट जाते हैं। यह दृश्य अद्भुत है।

सबसे बड़ा सवाल तो यही है। उस फिल्म पर बात करते हुए उस दौर की राजनीति को भी देखना चाहिए। अस्सी का दशक का पंजाब खालिस्तान आंदोलन से जूझ रहा था। चमकीला को खालिस्तानियों से धमकियाँ मिलती हैं कि अश्लील गाने बंद कर दे। वह खालिस्तानी नेताओं से माफी भी मांगता है तो उसे धार्मिक गीत गाने की सलाह मिलती है। एक दृश्य में वह नेताओं से सवाल करता है कि और गायक भी उसकी तरह गाने गा रहे हैं, उन्हें कोई कुछ नहीं कहता। सिर्फ उसे ही क्यों रोका जा रहा है, तब नेताओं के पास कोई जवाब नहीं होता। यहाँ सवाल उठाती है फिल्म कि क्या चमकीला के गायन से पंजाब के समकालीन गायकों को कोई जलन थी या चमकीला के विरोध के पीछे कोई जातीय द्वेष काम कर रहा था? जातीय द्वेष की बात गले से नीचे नहीं उतरती, क्योंकि उसे अखाड़े में बुलाकर गाना सुनने वाले हरेक वर्ग, जाति के थे। यूँ ही नहीं उसे पंजाब का एल्विश कहा जाता था। तो क्या उसे अपनी शोहरत की कीमत चुकानी पड़ी। आतंकवादियों की आड़ लेकर उससे जलने वालों ने उसकी हत्या कराई। यह गुत्थी आज तक अनसुलझी है। जाहिर-सी बात है कि चमकीला आज होता तो वह पीक पर होता।

चमकीला को ऐसी फिल्म की तरह स्वीकार किया जाना चाहिए जो बहस के नये गवाक्ष खोलती है। इसमें वो तमाम कमियां और खूबियां हैं जो किसी फिल्म में होती हैं। इम्तियाज की 'सेंस और सेंसिबिलिटी' इससे प्रश्नांकित नहीं की जा सकती। कुछ अनुत्तरित प्रश्न छोड़ कर फिल्म समाप्त हो जाती है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मोदी बोले-कांग्रेस ने कर्नाटक को 'लूट' का एटीएम बनाया

ये एक सेकेंड में गरीबी हटाने का दावा करते हैं, 60 साल सरकार थी, क्यों नहीं हटाया

पुणे/बेंगलुरु (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कर्नाटक के बागलकोट में जनसभा की। उन्होंने कहा- कांग्रेस पार्टी ने कर्नाटक को भी अपनी लूट का एटीएम बना लिया है। इतने कम समय में ही इन लोगों ने कर्नाटक का सरकारी खजाना खाली कर दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा- आज ये लोग एक झटके में गरीबी हटाने का दावा करते हैं, लेकिन इनकी 60 साल की सरकार, इनकी कई पीढ़ियों का काम गवाह है कि वंचित वर्ग के लिए इनकी मानसिकता क्या रही है। उनके दुख, उनकी तकलीफ से कांग्रेस और उनके साथियों को कोई वास्ता नहीं था। बागलकोट के बाद मोदी महाराष्ट्र के पुणे, सातारा, सोलापुर में भी जनसभाएं करेंगे।

इससे पहले मोदी ने रविवार को भी कर्नाटक के बेलगावी, उत्तर कन्नड़, दावणगेरे और बेल्लारी में चार सभाएं की थीं। कांग्रेस की पहचान उनके पापों के कारण बनी है। उन्होंने कर्नाटक का सरकारी खजाना खाली कर दिया है। विधायकों को विकास निधि का पैसा नहीं मिल रहा है। वो दिन दूर नहीं जब यहां की सरकार अपने अधिकारियों को पेमेंट नहीं दे पाएगी। आपके बच्चे भूखे मर जाएंगे। कर्नाटक में कांग्रेस सरकार नहीं चला रही। वह वसूली गैंग चला रही है। कांग्रेस के नेता अपनी तिजोरी भरना चाहते हैं। हमारे बेंगलुरु ने देश का नाम ऊंचा किया है, लेकिन कांग्रेस ने इसे टैंकर हब बना दिया है। हुबली में हमारी एक बेटी के साथ बहुत गलत हुआ। उसे चाकू मारा गया।

सीएम बोले- एमपी में कांग्रेस और सपा ने घुटने टेके

अमेठी में कहा-प्रदेश अध्यक्ष के नगर में कांग्रेस कैंडिडेट टिकट लौटा रहा, पटवारी, खरगे इस्तीफा दें

भोपाल। सीएम डॉ मोहन यादव ने उत्तर प्रदेश के गौरीगंज में अमेठी लोकसभा से बीजेपी की प्रत्याशी स्मृति ईरानी का नामांकन दाखिल कराया। इससे पहले सीएम और स्मृति ईरानी ने रोड शो किया। रोड शो के दौरान नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा- कि मेरे पूर्वज भी आजमगढ़ से मप्र गए थे। मैं अपनी धरती पर आया हूं। सुल्तानपुर में मेरी ससुराल है। यहां से मेरा जीवंत रिश्ता है। अमेठी में भाजपा प्रत्याशी स्मृति ईरानी के नामांकन में शामिल होने के बाद मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा- मैंने पहले ही कहा था कि पूरा मध्य प्रदेश मोदी मय हुआ है। वर्तमान समय में पूरे देश में प्रचंड आंधी चल रही है। मध्य प्रदेश में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने 29 सीटों पर कंप्रोमाइज किया था। 28 सीट कांग्रेस को दी, एक सीट समाजवादी ने ली। खजुराहो सीट पर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी ने नामांकन वापस लिया या जानबूझकर फॉर्म में त्रुटि की और सरेंडर किया। ताकि कलेक्टर के सिर पर आए। और उन्होंने अपना फार्म विड्रोल किया। दूसरा घोषित रूप से इन्होंने कहा था कि प्रशासन ने गलती कर दी। ये कर दिया वो कर दिया। जबकि ये स्पष्ट कहा गया था कि जब कोई उम्मीदवार फॉर्म भर के हस्ताक्षर नहीं करता, एक जगह नहीं बल्कि दो-दो जगह साइन नहीं करता है तो इसका मतलब यह है कि वो चुनाव नहीं लड़ना चाहता। तब भी कांग्रेस और सारे लोगों ने कहा कि यह गलत किया।

कांग्रेस-सपा ने घुटने टेके, वो लड़ना नहीं चाहते

अब जब कांग्रेस का घोषित प्रत्याशी सबके सामने प्रदेश अध्यक्ष की नगरी में फॉर्म विड्रोल कर लेता है। तो हम क्या कर सकते हैं? कांग्रेस ने घुटने टेके हैं हमारे मध्य प्रदेश के अंदर कांग्रेस के साथ समाजवादी पार्टी ने घुटने टेके वो लड़ना नहीं चाहते। उन में दम नहीं बचा। यह लोकतंत्र की ताकत है। मोदी जी की लोकप्रियता है और भाजपा के नीचे तक की गहराई है।

सुप्रभात

यह सच-झूठ के सामासिक चिन्ह को
मिटाने का समय है
झूठ को सच बताने का समय है यह
वज़न बाँध दिया गया सच के पाँव में
और यह
झूठ के साथ सच को
पानी में सिराने समय है
सच उतरता जा रहा है रसातल में
और उमंगित झूठ
तैर रहा है लहर-लहर
ताज्जुब यह है कि इस दृश्य को
सच मान रहे हैं लोग

- वसंत सकरगाए

एक आदमी के लिए सुप्रीम कोर्ट कैसे आ सकते हो

संदेशखाली मामले में ममता बनर्जी सरकार को लगी फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। संदेशखाली मामले में पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सरकार के सुप्रीम कोर्ट से झटका लगा है। सोमवार को शीर्ष न्यायालय ने सीबीआई जांच का विरोध करने पर पश्चिम बंगाल सरकार को फटकार भी लगाई है। टीएमसी का पूर्व नेता शेख शाहजहां संदेशखाली में महिलाओं के खिलाफ अपराध और जमीन हड़पने के मामले में आरोपी है।

इस मामले में जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच सुनवाई कर रही थी। अदालत ने उच्च न्यायालय की तरफ से दिए गए सीबीआई जांच के आदेश पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। साथ ही राज्य सरकार को कड़ी फटकार भी लगाई है। कोर्ट ने कहा, एक व्यक्ति के हित की रक्षा के लिए राज्य सरकार सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा कैसा खटखटा सकती है। इधर, राज्य सरकार की तरफ से पेश हुए वकील का कहना है कि वह हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती दे रहे हैं, क्योंकि इसमें कई टिप्पणियां राज्य के खिलाफ की गई थीं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की अगुवाई वाली टीएमसी सरकार ने शीर्ष न्यायालय में याचिका दायर की थी।

त्वरित टिप्पणी

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

किस मजबूरी में अक्षय बम ने चुनाव मैदान छोड़ा!

इंदौर के कांग्रेस उम्मीदवार अक्षय बम ने अपना चुनाव नामांकन वापस लेकर सियासी गलियारों को गरमा दिया। कोई समझ नहीं पाया कि आखिर ये क्या और क्यों हुआ? भाजपा के सामने अक्षय बम बेहद कमजोर उम्मीदवार थे, इसमें शक नहीं, पर वे इस तरह मैदान छोड़कर भाग जाएंगे इसका अंदाजा नहीं लगाया गया था। खास बात यह कि वे कांग्रेस से उम्मीदवारी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए। इसके पीछे कोई तो ऐसा पेंच है जो अभी सामने नहीं आया!

इंदौर से लोकसभा के कांग्रेस उम्मीदवार अक्षय कांति बम ने मैदान छोड़ दिया। नाम वापसी के दिन कुछ घंटे पहले हुए उनके इस फैसले के साथ ही राजनीतिक भूचाल आ गया। वे भाजपा विधायक रमेश मेंदोला और अन्य भाजपा नेताओं के साथ निर्वाचन कार्यालय पहुंचे और चुनाव से हट गए। इस अप्रत्याशित घटना से कांग्रेस में सन्नाटा है। किसी नेता के पास कोई जवाब नहीं, कि इसके पीछे क्या कारण हैं, ऐसा क्यों हुआ? खुद अक्षय बम ने भी अपने इस फैसले को लेकर कोई बयान नहीं दिया कि कांग्रेस से उनका मोहभंग क्यों हुआ! भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय की 'एक्स' पर की गई पोस्ट ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे कांग्रेस से पल्ला छुड़ाकर भाजपा में शामिल होने जा रहे हैं।

इस बार के लोकसभा चुनाव में जिस तरह की चौंकाने वाली घटनाएं घट रही है, उसमें ये सबसे अनोखी है। खजुराहो में समाजवादी पार्टी की उम्मीदवार मीरा यादव का नामांकन परचा रद्द होना। क्योंकि, उन्होंने नामांकन ने दस्तखत नहीं किए थे। सूरत में कांग्रेस उम्मीदवार का परचा रद्द होना और भाजपा को छोड़कर सभी अन्य उम्मीदवारों का नाम वापस ले लेना। ... और अब इंदौर से कांग्रेस के लोकसभा उम्मीदवार का मैदान ही छोड़ देना, स्वाभाविक नहीं है। ये तीनों घटनाएं सोची-समझी और पहले से बनाई गई राजनीतिक पटकथा का हिस्सा लगती है। मध्य प्रदेश में खजुराहो के बाद इंदौर दूसरी लोकसभा सीट है, जहां अब 'इंडिया' गठबंधन का कोई उम्मीदवार भाजपा के सामने मुकाबले में नहीं है।

अब सवाल उठ रहे हैं कि यदि इंदौर के कांग्रेसी उम्मीदवार अक्षय बम को चुनाव नहीं लड़ना था, तो उन्होंने महीनेभर सघन चुनाव प्रचार क्यों किया? चुनावी सभाएं क्यों की और पूरे प्रचार तंत्र पर बड़ी धनराशि क्यों खर्च की? इन सवालों का यही जवाब नजर आता है, कि जो हालात बने वो उनकी उम्मीदवारी के बाद ही सामने आए। इस वजह से उन्होंने मैदान से हटना बेहतर समझा। जो ख़बरें चर्चा में हैं उनके मंतव्य को समझा जाए और सीधे शब्दों में कहा जाए तो कांग्रेस का असहयोग और भाजपा के दबाव ने ही उन्हें मैदान से हटने के लिए मजबूर किया होगा।

उनकी गिनती कांग्रेस के पैसे वाले उम्मीदवारों में जा रही थी। उनकी 14 लाख की घड़ी पहनने की खबर भी चर्चा में आई। इस सबके बावजूद शुरू से ही वे चुनाव जीत सकने की संभावनाओं से बहुत दूर थे। 1989 में इंदौर संसदीय सीट से सुमित्रा महाजन के चुनाव जीतने के बाद से यहां कांग्रेस का लगातार पतन होता गया। वे यहां से 8 बार चुनाव जीतीं। पिछली बार (2019) के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने शंकर लालवानी को मौका दिया और वे साढ़े 5 लाख से ज्यादा वोटों से चुनाव जीते। इस बार भी पार्टी ने शंकर लालवानी को ही उम्मीदवार बनाया। उनके सामने कांग्रेस के अक्षय बम बहुत हल्के उम्मीदवार लग रहे थे। यह उम्मीद भी नहीं की जा रही थी कि वे पिछली लीड को भी कम कर सकेंगे। अक्षय बम को टिकट देने का एक कारण यह भी देखा गया कि यहां से कोई कांग्रेसी नेता चुनाव लड़ने के लिए आगे भी नहीं आया। इसका आशय यही है कि अक्षय बम एक निश्चित हार के लिए मैदान में उतरे थे। अक्षय ने विधानसभा चुनाव में भी क्षेत्र-4 से टिकट मांगा था, लेकिन कांग्रेस ने उन्हें नहीं देकर राजा मांधवानी को कांग्रेस ने उमीदवार बनाया था। आज अक्षय बम की तरह वे भी भाजपा में शामिल हो गए।

अक्षय बम ने कांग्रेस क्यों छोड़ी और भारतीय जनता पार्टी क्यों ज्वाइन की, इसे लेकर जो खबरें सामने आई उसके मुताबिक कांग्रेस की तरफ से अक्षय बम को चुनाव के लिए कोई सहयोग नहीं मिल रहा था। न तो कोई स्टार प्रचारक उनके प्रचार के लिए इंदौर भेजा जा रहा था और न संगठन ने इसकी कोई तैयारी की। इसके अलावा उन्हें चुनाव के लिए कोई आर्थिक सहयोग भी नहीं दिया गया। सारा खर्च उन्हें ही करना था। यह भी पता चला कि स्थानीय नेता चुनाव का अधिकांश खर्च अक्षय बम से लेकर खुद अपने हाथ से करना चाहते थे, इसे लेकर उन्होंने विरोध भी जताया था। बताया गया कि बूथ के खर्च को लेकर कुछ नेताओं से उनके मतभेद भी हुए।

जब कांग्रेस उम्मीदवार की अपनी पार्टी से नाराजगी उभरने लगी तो भाजपा ने इसे मौके के रूप में लिया और उन्हें भाजपा में शामिल करने का दांव खेला। बताते हैं कि अक्षय बम को कांग्रेस की उम्मीदवारी से हटकर भाजपा में शामिल करने की रणनीति एक होटल में बनाई गई। भाजपा नेताओं ने उन्हें हर तरह के सहयोग देने का भरोसा दिलाया। शर्तें यह रखी कि वे चुनाव मैदान से हट जाएं। जिस तरह के हालात बने थे और जीत की कोई संभावना कहीं नजर नहीं आ रही थी, तो अक्षय बम के लिए यही ठीक था कि वे उम्मीदवारी छोड़ दें और वही हुआ भी। बताया जा रहा है कि इससे पहले भाजपा के सभी बड़े नेताओं से सहमति ली गई। उसके बाद यह तय किया गया कि उन्हें उम्मीदवारी से हटाने के बाद भाजपा में शामिल कर लिया जाए।

समझा जा सकता है कि इंदौर में अब भाजपा के लिए कोई चुनौती नहीं है। वैसे तो अक्षय बम को चुनौती माना ही नहीं जा रहा था। लेकिन, आज मैदान छोड़कर उन्होंने पिछली लीड कम करने की कांग्रेस की उम्मीदों को भी पलीता जरूर लगा दिया। कांग्रेस उम्मीदवार के भाजपा में जाने के बाद इसे पार्टी के लिए बड़े झटके के रूप में देखा जा रहा है। क्योंकि, इसकी भनक कांग्रेस में किसी को नहीं लगी। कांग्रेस का कोई नेता इस मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया भी नहीं दे रहा। सिर्फ कांग्रेस के मीडिया से जुड़े केके मिश्रा ने जरूर 'एक्स' पर अपनी नाराजगी भरी टिप्पणी जरूर की। उन्होंने बेहद तीखे शब्द लिखे 'अक्षय बम, तुम तो 'फुस्सी बम' निकले, तुमसे अच्छी तो वैश्यायें हैं, जो अपने प्रोफेशन के प्रति ईमानदार होती हैं, कितने में बिके हो? वक्त हमेशा बदलता है, जिस कारण बिके हो,वही कारण हमेशा कायम रहेगा और वही तुम्हें भविष्य में शिकंजे में भी लेगा!

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40 °c

न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 30 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

कोलार में निकला कांग्रेस प्रत्याशी का रोड शो

कोलार को सुव्यवस्थित उपनगर बनायेंगे : अरुण श्रीवास्तव

भोपाल। कोलार को उपनगर तो कहने लगे हैं, लेकिन यहां उपनगर जैसी व्यवस्थाओं और सुविधाओं का अभाव है। सिक्सलेन रोड बनाई तो सैकड़ों लोगों का रोजगार छीन लिया। हम कोलार को सुव्यवस्थित और चंदा-चौथ वसूली मुक्त उपनगर बनाने का वायदा करते है। यह बात आज भोपाल लोकसभा से कांग्रेस के प्रत्याशी अरुण श्रीवास्तव ने कही।

कोलार में आज शाम को अरुण श्रीवास्तव का भव्य रोड शो निकाला गया। इस रोड शो में कांग्रेस नेता, कार्यकर्ताओं के अलावा स्थानीय जनता भी शामिल हुई। लोग इस क्षेत्र में बदलाव के पक्षधर दिख रहे थे। अरुण श्रीवास्तव ने कहा कि आज जनता चाहती है कि बदलाव हो। यहां के लोग समस्याओं के साथ ही स्थानीय प्रतिनिधि से ऊब चुके हैं।

कांग्रेस प्रत्याशी अरुण श्रीवास्तव के पक्ष में कोलार क्षेत्र में श्रीमती प्रतिभा अरुण श्रीवास्तव , श्रीमती श्वेता श्रीवास्तव एवं महक राणा द्वारा सैकड़ों महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ जनसंपर्क किया गया।

महिला टीम कोलार के नयापुरा, ललिता नगर एवं आसपास के क्षेत्र में पहुंची। युवा नेत्री महक राणा ने महिलाओं का आह्वान किया कि वे ही भोपाल का नया इतिहास बना सकती हैं। बीजेपी के नेता इस तरह से महिलाओं का अपमान कर रहे है, वो असहनीय है। राजपूत महिलाओं का अपमान किया गया है, जबकि राजपूत महिलाओं का एक अपना इतिहास रहा है। उन्होंने शहादत दी है। हम महिलाएं मिलकर बीजेपी को उखाड़ फेंके। भोपाल में पंजे को वोट देकर अरुण श्रीवास्तव को जिताएं और कोलार सहित पूरे भोपाल को चंदा, चौथ वसूली, महिलाओं के अपमान से बचाएं। जनसंपर्क के दौरान बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल रही, और उन्होंने अरुण श्रीवास्तव को जिताने का वायदा किया।

अंकल जी ने मूड खराब किया, मैं ठीक करने आया

राहुल गांधी ने दमन में बताया लाख रुपए वाला प्लान

दमन दीव (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के लिए प्रचार जोरशोर से चल रहा है। विरोधी दल एक दूसरे पर जमकर बरस रहे हैं। इसी बीच कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भाजपा सरकार पर रोजगार छीनने का आरोप लगाते हुए अपनी स्कीम बताई है। राहुल गांदी ने दमन में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा कि उनका लक्ष्य करोड़ों लोगों को लखपती बनाना है। राहुल गांधी ने कहा कि अंकल (पीएम मोदी) ने आपका मूड खराब कर दिया है और मैं उसे ठीक करने आया हूं। राहुल गांधी ने कहा, अगर मोदी जी 20-25 अरबपति बना सकते हैं तो कांग्रेस पार्टी करोड़ों लखपति बना सकती है। उन्होंने कहा, दिल्ली में सरकार आते ही हम प्रफुल्ल पटेल को यहां से दो मिनट में आउट कर देंगे।

समंदर में साबित की बादशाहत देवदूत बनी नौसेना

हूती विद्रोहियों के चंगुल से छुड़ा लाए ऑइल के टैंकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लाल सागर में इस समय हूती विद्रोहियों का आतंक है। अकसर ईरान समर्थित हूती तेल के टैंकरों पर हमला कर देते हैं और पोतों को हाइजैक करने की भी कोशिश करते हैं। हालांकि भारतीय नौसेना हूती विद्रोही हों या फिर समुद्री लुटेरे, दोनों के लिए काल बनी हुई है। भारत की तरफ बढ़ रहे ऑइल टैंकर शिप पर जब हूती विद्रोहियों ने मिसाइल से हमला किया तो तुरंत भारतीय नौसेना ऐक्टिल हो गई और शिप को सुरक्षित निकाल लिया। भारतीय नौसेना के आईएनएस कोच्चि ने 30 क्रू मेंबर्स को भी सुरक्षित बचा लिया जिसमें से 22 भारतीय थे। जानकारी के मुताबिक सभी क्रू के सदस्य पूरी तरह सुरक्षित हैं। बता दें कि मुसीबत में फंसे ऑइल टैंकर पर पनामा का ध्वज लगा हुआ था।। अधिकारियों ने बताया कि भारतीय नौसेना के विध्वंसक पोत आईएनएस कोच्चि ने 26 अप्रैल को एमवी एंड्रोमेडा स्टार नामक टैंकर पर हमले के बाद कार्रवाई की।

अब इंदौर में फट गया अक्षय 'बम', मुश्किल में कांग्रेस!

- नामांकन वापिसी के अंतिम दिन वापस लिया नाम

इंदौर (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को एक बार फिर किरकिरी का सामना करना पड़ा है। इंदौर सीट से पार्टी के प्रत्याशी अक्षय कांति बम ने नामांकन वापस ले लिया है। नामांकन की समय सीमा समाप्त हो जाने की वजह से अब इस सीट पर कांग्रेस की उम्मीदवारी खत्म हो गई है। अक्षय कांग्रेस को झटका देने के बाद भाजपा में शामिल हो गए हैं। बम मौजूदा भाजपा विधायक रमेश मंडोला के साथ डीसी दफ्तर पहुंचे और अपना नामांकन वापस ले लिया। बम का यह फैसला कांग्रेस के लिए बेहद चौंकाने वाला है। खबर लिखे जाने तक पार्टी की ओर से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई थी। जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष सिंह ने कहा कि इंदौर से कांग्रेस के लोकसभा उम्मीदवार अक्षय कांति बम ने अपना नामांकन वापस ले लिया है।

एलएसी पर फिर नए 'खेल' की तैयारी में चीन

- खुफिया रिपोर्ट से खतरनाक मंसूबों का हो गया खुलासा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्वी लद्दाख में चीन के साथ टकराव को चार साल हो गए हैं। आमने-सामने के सैन्य टकराव के बाद से ही वास्तविक नियंत्रण रेखा एलएसी पर अब भी तनाव है। तनाव के बीच जो खबर सामने आ रही है उसके मुताबिक चीन बॉर्डर पर अपनी स्थिति और अधिक मजबूत करने में जुटा हुआ है। चीन सीमा पर दोहरे उपयोग के लिए शियाओकांग गांव बसा रहा है और बुनियादी ढांचे को अधिक मजबूत कर रहा है। सैन्य ठिकानों को मजबूती देने के लिए भारत की ओर स्थित अपने हवाई ठिकानों पर अतिरिक्त विमानों की तैनाती की गई है। रक्षा और सुरक्षा प्रतिष्ठान के सूत्रों ने बताया कि नए सैटेलाइट इमेज, खुफिया रिपोर्ट और अन्य इनपुट लद्दाख से अरुणाचल प्रदेश तक फैले 3,488 किलोमीटर लंबे एलएसी के सभी तीन सेक्टरों में चल रही चीनी गतिविधि को दिखा रहे हैं। चीन ने हाल ही में सैमजंगलिंग के उत्तर से गलवान घाटी तक एक सड़क का निर्माण पूरा किया है, जिससे पीएलए को इस इलाके में तेजी से मूवमेंट करने में मदद मिलेगी। बफर जोन के पास भी वह अपनी स्थिति मजबूत करने में जुटा है। 15 जून, 2020 को हुई हिंसक झड़प के तीन सप्ताह बाद गलवान घाटी में पेट्रोलिंग पॉइंट-14 के आसपास नो-पेट्रोल बफर जोन बनाया गया था। सूत्रों ने बताया कि पीएलए पैंगोंग त्सो के दोनों किनारों पर अन्य बफर जोन के पीछे सैन्य और परिवहन ढांचे को मजबूत कर रही है। जिसमें कैलाश रेंज और गोगरा-हॉट स्प्रिंग्स शामिल हैं, जो सभी बड़े पैमाने पर उन क्षेत्रों में है जिन्हें भारत अपना क्षेत्र मानता है।

लंदन के मेयर चुनाव में दिल्ली के बिजनेसमैन भी कूदे

- पाकिस्तान मूल के नेता सादिक खान से होगा कड़ा मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्रिटेन की राजधानी लंदन में मेयर पद के लिए दिल्ली मूल के बिजनेसमैन भी रेस में हैं। आगामी 2 मई को ब्रिटिश नगरी में वोट डाले जाएंगे। मेयर पद के लिए दौड़ में शामिल भारतीय मूल के उम्मीदवार तरुण गुलाटी का कहना है कि लंदन के नागरिकों को सभी दलों ने निराश किया है। इसलिए वो लंदन की जिम्मेदारी लेना चाहते हैं ताकि शहर को एक अनुभवी सीईओ की तरह संभाल सकें। बता दें कि तरुण गुलाटी का मुकाबला लेबर पार्टी के नेता और पाकिस्तानी मूल के सादिक खान से है। लंदन के मौजूदा मेयर सादिक खान पहले मुस्लिम मेयर ही नहीं बल्कि यूरोपियन यूनियन की किसी भी राजधानी के पहले मुस्लिम मेयर हैं। उन्होंने 2016 में अपने प्रतिद्वंद्वी गोल्डस्मिथ को हराया था।

मिशन लोकसभा

देशभर में मारवाड़ियों को साधेंगे राजस्थान बीजेपी के नेता

सीएम, डिप्टी सीएम के दौरे तय, भजनलाल शर्मा बंगाल और झारखंड के दौरे पर रहेंगे

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान की 25 लोकसभा सीटों पर चुनाव सम्पन्न हो चुका है। ऐसे में अब प्रदेश के नेताओं को देशभर में मारवाड़ियों (राजस्थानियों) को साधने का टास्क दिया गया है। प्रदेश से मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, केबिनेट मंत्री और अन्य प्रदेश स्तरीय नेताओं के दौरे होंगे। देशभर में रहने वाले राजस्थानियों को बीजेपी के पक्ष में करने के लिए इन नेताओं को वहां भेजा जाएगा। प्रदेश के नेता राजस्थानियों के बीच जाकर बीजेपी के पक्ष में मतदान करने की अपील करेंगे। दरअसल, राजस्थान से बड़ी संख्या में व्यापार के सिलसिले में राजस्थानी देश के अलग-अलग राज्यों में बसे हैं। सालों से इन राज्यों में रहने के कारण वे वहां के स्थानीय वोटर भी हैं। ऐसे में पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना सहित अन्य राज्यों में जहां राजस्थानियों की तादाद ज्यादा है। वहां प्रदेश के नेताओं को प्रचार के लिए भेजा जा रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को कलकत्ता के लिए रवाना हो गए। जहां वे श्रीरामपुरा लोकसभा सीट पर बीजेपी प्रत्याशी की नामांकन सभा और रोड शो में शामिल हुए।

- **बीजेपी के 150 नेता अन्य राज्यों में करेंगे प्रचार**-प्रदेश बीजेपी के करीब 150 नेता अन्य राज्यों में चुनाव प्रचार के लिए जाएंगे। पश्चिम बंगाल, झारखंड उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, पंजाब, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों में प्रदेश के नेताओं को जिम्मदारियां दी गई हैं। इसी के तहत पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, प्रभुलाल सैनी सहित कई नेता रविवार को तेलंगाना के लिए रवाना हो गए। ये नेता वहां प्रचार के साथ-साथ चुनाव प्रबंधन का काम भी देखेंगे। इसी तरह से बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी, कैलाश चौधरी, झाबर सिंह खर्रा सहित अन्य मंत्री व नेता दूसरे राज्यों में प्रचार के लिए जाएंगे।

यात्रियों की हो गई मौज

देश के 80 मार्गों पर रोज चलेंगी अमृत भारत ट्रेनें!

- 450 अमृत भारत गाड़ियों के निर्माण का रेलवे ने दिया ऑर्डर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे अगले 3 साल के भीतर दिल्ली से पूर्वी भारत के करीब 80 मार्गों पर प्रतिदिन कम से कम 1 अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन का ऑपरेट करने लगेगी। इससे अल्प आय वर्ग के यात्रियों को तेज गति से आरामदेह यात्रा की सुविधा मिलेगी और अन्य गाड़ियों पर उनकी निर्भरता भी घटेगी।

रेल मंत्रालय ने अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों के प्रयोग की सफलता को देखते हुए करीब 450 अमृत भारत गाड़ियों के निर्माण का ऑर्डर दे दिया है। तीन से चार साल में ये गाड़ियां पटरियों पर दौड़ती नजर आएंगी। इसके अलावा मौजूदा एलएचबी रैक वाली गाड़ियों को भी धीरे-धीरे

अमृत भारत ट्रेन सेट की डिजायन में ढाला जाएगा। सेमी परमानेंट कपलर और दोनों ओर इंजन लगा कर इसकी दक्षता को बढ़ाया जाएगा। बजट में 3000 ट्रेनों को अमृत भारत तकनीक से आधुनिकीकृत करने की बात कही गई है। सूत्रों के अनुसार, रेलवे की योजना है कि 3-4 साल के भीतर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, ओडिशा और पूर्वोत्तर के 80 मार्गों पर कम से कम 1 अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन रोजाना चलाने की है। इससे पूर्व की ओर जाने वाली गाड़ियों में दबाव कम हो जाएगा।

संकट मोचन संगीत समारोह

गंगा की पावन मिट्टी से कलाकारों की मूर्ति उकेरते: राजेश

मूर्तिकार राजेश कुमार

(लेखक कलाविज्ञ और उप्र सरकार में अधिकारी हैं)

संकट मोचन संगीत समारोह की मूल आत्मा यह है कि कोई कितना ख्यात कलाकार क्यों न हो, वह यह नही कहता कि मैं संकट मोचन में अपनी कला का प्रदर्शन कर रहा हूँ अपितु वह कहता है कि मैं अपनी कला के जरिये संकट मोचन के दरबार में हाजिरी लगा रहा हूँ , उपासना कर रहा हूँ। यही हाल सायं साढे सात बजे से भोर होने तक जमे रहने वाले श्रोताओं का भी है, श्रोता भी रात भर संकट मोचन मंदिर के परिसर में संगीत की रसवर्षा में भीगने को उपासना मानते है। ऐसे ही एक उपासक है बिहार के दरभंगा जिले के निवासी राजेश कुमार।

राजेश कुमार को बचपन से ही कला में विशेष रुचि थी,जबकि कला की कोई पारिवारिक पृष्ठभूमि उनके पास नही थी। परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी कि काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में ललित कला में ग्रेजुएशन में दाखिला मिलने पर दरभंगा से बोरियां बिस्तर लेकर वाराणसी के लिए चलें तो पिता ने कहा कि जितना हो सकें पैसे भेजना। ऐसे हालात में राजेश ने पढाई के साथ-साथ नौकरी चाकरी भी की परन्तु अपनी कला साधना में लगे रहे ।

अपनी साधना के बल पर अनेकों पुरूस्कारों और सम्मानों से नवाजे जा चुके मूर्तिकार राजेश कुमार के मन में वर्ष 2014 में एकाएक विचार आया कि संकट मोचन संगीत समारोह में वह किस प्रकार अपनी भूमिका अदा कर संकट मोचन की उपासना कर सकते है। राजेश कुमार की इस इच्छा को देखते हुए महंत प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र के अनुज डॉ. विजय नाथ मिश्र, जो राजेश कुमार की अंगुलियों के जादू के कद्रदान थे, ने सुझाया कि जब कोई ख्यात कलाकार मंच पर अपनी प्रस्तुति दे रहा हो, तक तुम उसकी मूर्ति बनाओ। डॉ. विजय नाथ मिश्र के निर्देशन में राजेश कुमार को अपने तई संकट मोचन की उपासना का रास्ता मिला गया। पिछले दस बरस से राजेश कुमार विश्वविख्यात संकट मोचन संगीत समारोह में मूर्धन्य कलाकारों के लाइव स्कल्पचर बना रहे है और संकल्पित है कि जब तक जीवन रहेगा, वह संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन करते रहेगें।

राजेश अभी तक पंडित शिव कुमार शर्मा, बॉसुरी सम्राट पंडित हरि प्रसाद चौरसिया,अनूप जलोटा, राजेश्वर आचार्य,पंडित माधव गुडी,पंडित जसराज, गुदेचा बंधु, रवीन्द्र जैन जैसे मूर्धन्य कलाकारों का लाइव स्कल्पचर बनाने के अलावा जनकवि नार्गाजुन, त्रिलोचन, जानकी बल्लभ शास्त्री,आलोचक डॉ. नामवर सिंह, चित्रकार जयकृष्ण अग्रवाल, हिम्मत शाह के लाइव स्कल्पचर बना चुके है। वाराणसी के वैभव को रेखाकिंत करते हुए उन्होनें वाराणसी की पांच ऐसी विभूति, जिन्हें भारत रत्न से नवाजा जा चुका है, पंडित रवि शंकर, पंडित मदन मोहन मालवीय, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान,डॉ. भगवान दास और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को एक स्कल्पचर में गढ़ा है।

राजेश कुमार अपने अब तक के काम की चर्चा करते हुए बताते है कि बरसों से उनकी इच्छा थी कि संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए कलाकारों का स्कल्पचर गंगा की पावन और लचीली मिट्टी से मैं बनाऊ, उधर प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले संकट मोचन संगीत समारोह में संगीत के समानान्तर ललित कला एग्जीविशन भी आयोजित की जायें, यह ख्वाब महंत विशम्भर नाथ मिश्र के अनुज और बनारस के लब्ध प्रतिष्ठित न्यूरो चिकित्सक डॉ. विजय नाथ मिश्र की ऑखों में बरसों से तैर रहा था। दस वर्ष पहले साल 2014 में 91वें संगीत समारोह में इस स्वप्न को पहली बार साकार किया गया। 14 अप्रैल 2014 का वह अविस्मरणीय क्षण राजेश को आज भी याद है, संगीत समारोह की चौथी निशा में संतूर सम्राट पंडित शिव कुमार शर्मा की प्रस्तुति थी। संतूर बजाते हुए उनका स्कल्पचर बनाने का निर्णय लिया गया।

पंडित शिव कुमार शर्मा ने संतूर पर राग बागेश्वरी की अवतारणा की। आलाप, जोड झाला के बाद झप ताल फिर तीन ताल में बंदिशें बजाई। संतूर की स्वर लहरियों के बीच श्रोताओं की मंच तक उमडती भीड, हर हर महादेव के गगनभेदी जयकारे के बीच राजेश कुमार अपनी ही धुन में पंडित शिव कुमार शर्मा के चेहरे पर नजर गढ़ाये अपनी अंगुलियों का जादू बिखेरने में तल्लीन। पंडित शिव कुमार शर्मा के घुघराले बाल राजेश की बैचेनी का कारण बने हुए थे। मिट्टी से घुघराले बालों को कैसे गढे जायें, इस बैचेनी में राजेश ने संकट मोचन का स्मरण किया और ऐसा चमत्कार हुआ कि पंडित शिव कुमार शर्मा के बनाये स्कल्पचर में उनके घुघराले बालों रुबरु उभर आयें। राजेश के इस काम की पंडित जसराज, पंडित शिव कुमार शर्मा ने भूरि भूरि प्रशंसा की।

राजेश कुमार इन दिनों बिहार में अररिया जनपद में जवाहर नवोदय विदयालय में बतौर कला अध्यापक कार्यरत है और घर बाहर, नौकरी के झमेले के बावजूद 30 अप्रैल को संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी लगाने पहुंच रहे है। राजेश संकल्पित है कि वह जीवन भर संकट मोचन संगीत समारोह में गंगा की पावन माटी से कलाकारों के लाइव स्कल्पचर बनाते रहेगें।

कजलीखेड़ा में अवैध शराब का जखीरा देख दंग रह गई पुलिस

खेत में गाड़ रखे थे शराब से भरे कुप्पे, सबसे पहले गांव में घेराबंदी की, फिर शराब ढूंढी

भोपाल। भोपाल के कोलार रोड स्थित कजलीखेड़ा में सोमवार को आबकारी विभाग की टीम ने कार्रवाई की। यहां पर शराब के अवैध कारोबार की सूचना मिली थी। जब अफसर मौके पर पहुंचे तो अवैध शराब का जखीरा देख दंग रह गए। कारोबारियों ने खेत में शराब से भरे कुप्पे गाड़ रखे थे। वहीं, भट्टी पर शराब बनाई जा रही थी। जिला आबकारी कंट्रोलर आरजी भदौरिया के नेतृत्व यह कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया, कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह और सहायक आबकारी आयुक्त दीपम रायचूरा के निर्देशन में टीमें बनाई गई हैं। इन टीमों ने सोमवार को कजलीखेड़ा में दबिश दी। आबकारी कंट्रोलर भदौरिया ने बताया, कार्रवाई के लिए छह से सात टीमें बनाई गई थीं। सबसे पहले कजलीखेड़ा को चारों ओर से घेर लिया। फिर शराब तलाशी गई। यहां पर मैदान और खेतों में छुपा कर रखे गए कुप्पों में करीब 3200 किलो ग्राम महुआ लाहन और 315 लीटर हाथ भट्टी कच्ची

शराब मिली। जमीन में गड़े कुप्पों को ढूंढने में दो से तीन घंटे लग गए। कुछ जगहों पर भट्टी जल रही थी और शराब बनाई जा रही थी। जब्त शराब की कीमत 3 लाख 67 हजार रुपए है। दो महिलाओं को पकड़ा गया है। उनके विरुद्ध मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1)क के तहत प्रकरण दर्ज किए हैं। कजलीखेड़ा में लंबे समय से अवैध शराब बनाई जा रही थी, जो आसपास के गांवों में सप्लाई होती थी। इस मामले में किन लोगों की संलिप्तता है, इसका भी पता लगाया जा रहा है। भोपाल में लोकसभा चुनाव के चलते पुलिस और जिला प्रशासन की टीमें लगातार कार्रवाई कर रही है। अब तक करीब पौने दो करोड़ रुपए की अवैध शराब और नकद राशि जब्त की जा चुकी है। शनिवार देर रात में भी आबकारी विभाग ने कार्रवाई करते हुए अवैध शराब जब्त की। रविवार को भी दुर्गानगर में कबाड़े की दुकान पर कार्रवाई की गई।

शहर में 4 प्रत्याशियों ने अब तक एक भी रुपया नहीं किया खर्चा

2 ने ही खर्च किए 6 लाख से ज्यादा, 13 कैंडीडेट का चुनावी खर्च 1 फीसदी भी नहीं

भोपाल। भोपाल लोकसभा सीट से कुल 22 उम्मीदवार मैदान में हैं। इनमें से 6 करोड़पति और 13 लखपति हैं, लेकिन चुनाव में खर्च करने में वे पीछे हैं। अब तक 19 कैंडिडेट्स ने ही हिसाब दिया है। जिनमें से 2 कैंडिडेट ही ऐसे हैं, जिन्होंने 6.11 लाख और 26.55 लाख रुपए खर्च किए हैं। 4 उम्मीदवार ऐसे हैं, जिन्होंने खर्च नील बताया है। यानी, उनका एक रुपया भी खर्च नहीं हुआ। बाकी ने चुनाव खर्च की तय लिमिट का 1त्न भी खर्च नहीं किया। 3 उम्मीदवारों ने तो चुनाव आयोग को खर्च का हिसाब ही नहीं दिया है। इनमें सबसे अमीर कैंडिडेट मैथिलीशरण गुप्त भी शामिल हैं। वे पूर्व स्पेशल डीजी भी रह चुके हैं। खर्च के मामले में बीजेपी के आलोक शर्मा सबसे आगे हैं। वे अब तक 26 लाख 55 हजार रुपए से ज्यादा खर्च कर चुके हैं। इनमें 24 अप्रैल को पीएम नरेंद्र मोदी के रोड शो का खर्च शामिल नहीं है। दूसरे नंबर पर कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव हैं, जिन्होंने 6.10 लाख रुपए खर्च किए हैं। 2 करोड़पति निर्दलीय उम्मीदवार मैथिलीशरण गुप्त और आरके महाजन ने चुनाव खर्च का हिसाब ही नहीं दिया है। गुप्त के पास करीब 20 करोड़ और महाजन के पास 1.58 करोड़ रुपए की संपत्ति हैं। 6.92 करोड़ रुपए की संपत्ति के मालिक बसपा के भानुप्रताप सिंह ने 31 हजार 36 रुपए खर्च किए हैं। वहीं, परिवर्तन पार्टी ऑफ इंडिया के कैंडिडेट अक्षय गोठी ने 21 हजार रुपए का चुनावी खर्च बताया है। कुल 22 में से 14 उम्मीदवार ऐसे हैं, जो लखपति हैं। इनमें सबसे अमीर निर्दलीय अंकित राय हैं। उनके पास 99 लाख 90 हजार रुपए की

संपत्ति है। उन्होंने अब तक 11 हजार 50 रुपए खर्च किए हैं। इनके अलावा बाबूलाल सेन, बलराम सिंह तोमर, भारती यादव, दीनदयाल अहिरवार, राजेश कीर, अब्दुल ताहिर, मो. अशरफ, मुदित चौरसिया, अजय कुमार पाठक, संजय सरोज, जय सिंह लोधी, हितेंद्र शहारे और धनराज शेंडे भी लखपति उम्मीदवार हैं। इनमें भारती यादव, राजेश कीर, संजय सरोज और आरके महाजन ने कुछ भी खर्च होना बताया है। सबसे कम चुनावी खर्च क्रांति जनशक्ति पार्टी के रामप्रसाद पटेल का है। उन्होंने अब तक 1500 रुपए ही खर्च किए हैं। मुदित भटनागर के बाद वे दूसरे सबसे कम संपत्ति के मालिक हैं। उनके पास 75 हजार 444 रुपए की संपत्ति है। भटनागर 32 हजार 300 रुपए खर्च कर चुके हैं। लोकसभा चुनाव में एक उम्मीदवार कुल 95 लाख रुपए खर्च कर सकता है। प्रत्याशियों के चुनाव खर्चों में प्रचार और उससे जुड़े सभी तरह के व्यय शामिल रहते हैं। इसमें उनके द्वारा और उनके समर्थकों द्वारा प्रचार के लिए गाड़ियों से लेकर टेंट, खाना-पीना, नाश्ता, पंखे, फूल, गुलदस्ते समेत सभी तरह के सामान और प्रचार के माध्यम खर्च में जोड़े जाते हैं। यहां तक कि किसी प्रायोजित कार्यक्रम में शामिल होने से उसका खर्च उनके खाते में जुड़ जाता है। आम लोग भी प्रत्याशियों के खर्च को लेकर शिकायत या सूचना सी-विजिल और अन्य माध्यम से चुनाव आयोग को दे सकते हैं। वर्तमान में बीजेपी के आलोक शर्मा सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा एक्टिव है। इसके चलते उनके सोशल मीडिया अकाउंट पर एमसीएमसी कमेटी नजर रख रही है। कोई रील बूस्ट कराने का पेमेंट भी खर्च में जोड़ा जा रहा है। अब तक 45 हजार रुपए शर्मा के खर्च में जोड़े जा चुके हैं। कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव के चुनाव खर्च में करीब 25 हजार रुपए जोड़े गए हैं।

उम्मीदवारों के हिसाब पर चुनाव आयोग को भरोसा नहीं!

नकुल नाथ के खर्च में 10 लाख से ऊपर का आ रहा अंतर

भोपाल। चुनाव आयोग के अनुसार मध्य प्रदेश में अभी तक किसी भी उम्मीदवार ने 95 लाख रुपए की निर्धारित खर्च की सीमा को पार नहीं किया है। हालांकि खर्चे की यह आखिरी डिटेल नहीं है। आखिरी डिटेल उम्मीदवारों को परिणाम घोषित होने के 30 दिनों के भीतर प्रस्तुत करनी होती है। यदि उम्मीदवारों द्वारा प्रस्तुत विवरण पर विश्वास किया जाए, तो कांग्रेस के सिद्धार्थ कुशवाह ने सतना निर्वाचन क्षेत्र में सबसे ज्यादा 67 लाख रुपये खर्च किए हैं। अब तक जमा किए गए ब्यौरे के मुताबिक बीजेपी की भारती पारधी ने 63 लाख रुपये खर्च किए हैं। पारधी के बाद बीजेपी के गणेश सिंह का नाम है, जो सतना

से मैदान में हैं। उन्होंने भी अब तक लगभग 61 लाख रुपये खर्च कर दिए हैं। छिंदवाड़ा में पूर्व सीएम कमल नाथ के बेटे और कांग्रेस प्रत्याशी नकुल नाथ ने चाय-नाश्ते पर कोई पैसा खर्च नहीं किया। न ही उनके बीजेपी प्रतिद्वंद्वी विवेक बंटी साहू ने। हालांकि, पर्यवेक्षक बताए गए खर्चे से संतुष्ट नहीं हैं। रजिस्टर में जमा किए गए विवरण के अनुसार, नकुल नाथ ने 44.18 लाख रुपये खर्च किए थे। हालांकि पर्यवेक्षकों ने इसे 61.38 लाख रुपये बताया। इसी तरह उनके प्रतिद्वंद्वी बंटी साहू ने 25.38 लाख रुपये खर्च किये हैं, हालांकि पर्यवेक्षक ने इसे 36.18 लाख रुपये पाया है। उम्मीदवारों द्वारा किया गया मुख्य खर्च प्रचार के लिए वाहन किराये पर लेना है। चर्चित खजुराहो सीट पर प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने वाहन किराये पर लेने में सबसे अधिक पैसा खर्च किया है। इसके अलावा हेलीपैड के निर्माण में भी पांच बार प्रति हेलीपैड 5000 रुपये के हिसाब से 25,000 रुपये खर्च किए हैं। मंडला से भाजपा के लिए चुनाव लड़ रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते ने अब तक जमा किए गए विवरण के अनुसार 59.72 लाख रुपये खर्च किए हैं। उन्होंने हेलीपैड के निर्माण पर हर बार 5000 रुपये की दर से तीन बार 20,000 रुपये भी खर्च किये हैं।

डॉ. जवाहर कर्नावट मध्य प्रदेश लेखक संघ द्वारा सम्मानित

भोपाल। मध्य प्रदेश लेखक संघ द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रतिष्ठित वार्षिक साहित्य सम्मानों के अंतर्गत आज प्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता डॉ.जवाहर कर्नावट को भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में वैश्विक उपलब्धियां के लिए श्री अरविंद चतुर्वेदी साहित्य सेवी सम्मान प्रदान किया गया । डॉ. कर्नावट को यह सम्मान हिंदी भवन भोपाल में आयोजित लेखक संघ की मासिक काव्य गोष्ठी में वयोवृद्ध साहित्यकार श्री यतींद्रनाथ राही ,संघ के उपाध्यक्ष श्री प्रभु दयाल मिश्र एवं श्री ऋषि श्रृंगारी ने प्रदान किया। इस अवसर पर भोपाल के अलावा प्रदेश के अन्य शहरों से भी लेखक गण उपस्थित रहे। संचालन प्रादेशिक मंत्री से राजेंद्र गट्टानी ने किया।

राजधानी में बुजुर्गों ने की लोगों से वोट की अपील

अपने-अपने राज्यों की पारंपरिक ड्रेस पहनकर कहा-छोड़कर सारे काम पहले करो मतदान

भोपाल। कोई राजस्थानी ड्रेस पहना था, तो कई पंजाबी। कोई मराठी अंदाज में नजर आ रहा था तो कोई बंगाली में। कुछ इस तरह का नजारा रोहित नगर स्थित शहर के अपना घर वृद्ध आश्रम में सोमवार को दिखाई दिया। मौका था आश्रम में मतदान जागरुकता कार्यक्रम का, जहां पर वृद्धाश्रम में बुजुर्गों ने लोकसभा चुनाव को लेकर वोटिंग की अपील की है।

आश्रम में स्थित तकरीबन (15) बुजुर्गों ने देश के अलग-अलग राज्यों की पारंपरिक ड्रेसेस पहनकर लोगों को वोट डालने के लिए जागरूक किया। 'अपना घर' की संचालिका माधुरी मिश्रा ने बताया कि इस कार्यक्रम को करने का उद्देश्य लोगों को वोट की अहमियत समझाना है। यह बहुत बड़ा पर्व है, हमारे यहां के बुजुर्गों में बहुत उत्साह हैं। उनका उत्साह देखते ही बनता है। वे कह रहे हैं कि हमें बढ़-चढ़कर मतदान करना चाहिए। आज इसमें बुजुर्गों ने अपने-अपने राज्यों की पारंपरिक पोशाक पहनी थी, और अपनी ही भाषा में मतदान के लिए संदेश दिया। इसमें राजस्थानी, मराठी, गुजराती और साउथ के कई राज्यों के पारंपरिक पोशाक इन्होंने पहनी थी। आश्रम के बुजुर्गों ने गुजराती, मराठी, बुंदेलखंडी, पंजाबी समेत देश के कई राज्यों की पोशाकों को पहनकर जागरुकता का संदेश दिया। माधुरी मिश्रा ने बताया कि हर राज्य के पारंपरिक कपड़ों का आत्मीय जुड़ाव होता है। ऐसे में राष्ट्र के लिए हमारे आश्रम के बुजुर्ग अलग-अलग राज्यों की पोशाक को पहनकर वोट के लिए अपील की। जिससे उस राज्य का व्यक्ति इन्हें देखकर वोट करने के लिए प्रेरित होगा।

किराना दुकानों में दवाओं की बिक्री के प्रस्ताव का भोपाल में भी विरोध

एसोसिएशन अध्यक्ष बोले-किराने की दुकान पर कैसे बेच सकेंगे दवा, प्रस्ताव वापस हो

भोपाल। बिना लाइसेंस के ओवर-द-काउंटर (OTC) दवाओं की बिक्री की अनुमति देने के केंद्र सरकार के प्रस्ताव का भोपाल में भी विरोध हो रहा है। भोपाल केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेंद्र धाकड़ ने कहा कि किराने की दुकान पर दवाएं कैसे बेची जा सकेंगी? यह प्रस्ताव वापस होना चाहिए। भोपाल में भी ज्ञापन सौंपा जाएगा। ऑल इंडिया ऑर्गनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स (AIOCD) ने पहले ही इस प्रस्ताव पर चिंता जताई थी। साथ ही स्वास्थ्य मंत्री, प्रमुख स्वास्थ्य सचिव, औषधि महानियंत्रक, स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशक, राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (NPPA) के अध्यक्ष और अन्य संबंधित अधिकारियों ज्ञापन भी सौंपे जा चुके हैं।

ट्रांसजेंडर बोले-नेता वादे करते हैं, पूरे कभी नहीं करते

नरेंद्र मोदी कर रहे काम, हमारा वोट उन्हीं को, ट्रांसजेंडर बोर्ड के गठन की भी मांग

भोपाल। नेता वादे तो करते हैं मगर पूरे नहीं करते हैं। अगर कोई पार्टी मुझे टिकट दे तो मैं एक बार फिर मैदान में आ सकती हूं। यह कहना है किन्नर (ट्रांसजेंडर) गुरु सुरैया का। सुरैया बीते दिन मतदान जागरूकता कार्यक्रम में शो स्टॉपर के रूप में शामिल हुईं। इस मौके पर उन्होंने अपने अनुभवों को साझा किया। सुरैया ने चुनाव को लेकर अपनी ख्वाहिश बताते हुए कहा कि किन्नर समाज के अंदर महापौर और विधायक भी रह चुके हैं। मैं भी चुनाव लड़ चुकी हूं, और आगे भी लड़ सकती हूं। अगर कोई पार्टी समर्थन दे तो फिर से मैदान में आ सकती हूं। इसके अलावा उन्होंने चुनाव के समय नेताओं के वादों को लेकर कहा कि वह कभी पूरे नहीं होते वह सिर्फ चुनावी वादे होते हैं। सुरैया ने बातचीत एनजीओ (नॉन गर्वमेंट आर्गनाइजेशन) पर गंभीर आरोप लगाए हैं, उन्होंने बताया- हमें फिलहाल सरकार से कोई मदद नहीं चाहिए। हमारे लिए जो मदद आती है वह सभी एनजीओ के पास चली जाती है। किसी भी किन्नर तक एक रुपए की मदद सरकार की नहीं पहुंचती है। सारी मदद एनजीओ को ही चली जाती है। इसलिए हम तो यही कहते हैं कि हमें सरकार से कोई मदद नहीं चाहिए। हमने तो और उल्टा लॉकडाउन में पिछड़ों और गरीबों की मदद की।

हमारे कोई मुद्दे नहीं, हमें बस अपने अनुसार जीने दिया जाए- सुरैया ने चुनाव के समय में मुद्दों के बारे में बात करते हुए कहा कि हमारे कोई मुद्दे नहीं हैं। हम तो बस सरकारों से यही चाहते हैं कि हमें बस अपने अनुसार जीने दिया जाए। अगर कोई किन्नर दो पांच रुपए मांग रहा है तो उसे मांगने दिया जाए, हम ना तो नौकरी करना चाहते हैं और ना काम। वैसे भी हम पढ़े लिखे हैं नहीं तो हम क्या कर सकते हैं। सुरैया ने बताया कि किन्नर बोर्ड गठन जरूरी है, मगर इसमें भी मेरा यह कहना है कि जब भी इस बोर्ड का गठन हो तो इसमें चलते फिरते किसी को भी पॉवर नहीं देनी चाहिए। जो मुखिया है उसे ही मिलना चाहिए, ऐसा नहीं कि चलते फिरते किसी को भी इसमें शामिल किया जाए। किसी पार्टी या सरकारों से शिकायत के जवाब में सुरैया ने कहा- हमें कभी किसी पार्टी या सरकारों से शिकायत नहीं है। हम भी चाहते हैं कि पार्लियामेंट में हमारा भी प्रतिनिधित्व हो। क्योंकि हम भी देश के नागरिक हैं।

मध्य प्रदेश में भी ट्रांसजेंडर बोर्ड का हो गठन: संजना सिंह- एक अन्य ट्रांसजेंडर संजना सिंह ने बताया कि हम चाहते हैं कि ट्रांसजेंडर बोर्ड (किन्नर कल्याण बोर्ड) का गठन होना चाहिए, इसका गठन होते ही किन्नरों से जुड़ी सभी तरह की समस्याओं का समाधान खुद ही होगा। वहीं चुनावों में जागरूकता को लेकर उन्होंने कहा कि हम अपेक्षित वर्ग हैं। लंबे समय से भेदभाव का दंश झेल रहे थे, मगर अब हम बढ़-चढ़कर मतदान में हिस्सा लेते हैं, और लोगों को जागरूक करते हैं। यह बहुत अच्छा लगता है। संजना ने बताया कि जो लोग हमारे लिए खड़े हैं बस यही बात ध्यान में रखकर हम वोट करने जाएंगे। हम यह भी देखेंगे कि वह लोग समाज कल्याण के लिए क्या कर रहे हैं, या कर चुके हैं। वे कितने सक्रिय हैं यह देखना भी जरूर होगा। अब किन्नरों में भी मतदान के प्रति जागरूकता बढ़ी है। वे भी इसमें अब बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। क्योंकि हम भी भारत के नागरिक हैं वोट हमारा अधिकार है, वोट करने से ही एक मजबूत लोकतंत्र बनता है। संजना ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने देश में हमें एक अलग पहचान दिलवाई है। साल 2019 में ट्रांसजेंडर के पक्ष में जो फैसला आया है। यानी जिस तरह से सुप्रीम कोर्ट ने तीसरे लिंग के रूप में सेल्फ आइडेंटिटी या पहचान दी है। यही वजह से कि हम अब मतदान में भी आगे आ रहे हैं और समाज को भी प्रेरित कर रहे हैं। संजना ने बताया कि हम चाहते हैं कि हमें भी महिलाओं और पुरुषों की तरह कई योजनाओं का लाभ मिलना चाहिए। क्योंकि सरकारें कई तरह की योजनाएं पुरुष और महिलाओं के लिए लाती हैं, हम चाहते हैं कि सरकार हमारे लिए भी इस तरह हमें भी हर सुविधा का लाभ मिले। क्योंकि हम भी समाज के कई क्षेत्रों में सक्रिय हैं। इस कार्यक्रम में शामिल होने आई ट्रांसजेंडर नेहा ने बताया कि चुनाव के दिन बहुत उत्साहित रहते हैं, उस दिन कोई और काम नहीं करते हैं। यह हमारे लिए एक त्यौहार की तरह है। वहीं वोट देने जाएंगे तो किस बात को ध्यान में रखकर वोट देंगे इसके जवाब में नेहा ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। मेरा पहला वोट तो उन्हीं को जाएगा। नेहा ने बताया कि जब चुनाव आते हैं तो कई उम्मीदवार हमसे कई तरह के वादे करते हैं मगर जब चुनाव खत्म हो जाता है तो वह लौटकर नहीं आते हैं। हम चाहते हैं कि दोनों जेंडर्स की तरह हमारे लिए भी योजनाएं बनानी जानी चाहिए। मगर ऐसा होता नहीं है। बस हमारा सिर्फ वोट डालने का अधिकार, फिर उसके बाद हमारी फाइल बंद हो जाती हैं। सरकारें कभी कुछ नहीं करती हैं हम तो बस इतना ही चाहते हैं कि जैसे हम जीते आए हैं हमें बस वैसे जीने दिया जाए, वह अधिकार कभी हमसे छीना ना जाए।

राहुल गांधी 6 मई को झाबुआ, 7 मई को बड़वानी आएंगे

थर्ड फेज में कांग्रेस लीडरशिप के दौरे बढ़े, मुरैना में प्रियंका के रोड शो की टाइमिंग बदली

भोपाल। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में कांग्रेस लीडरशिप के एमपी में दौरे बढ़ाए जा रहे हैं। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी थर्ड फेज में तीन बार मप्र आएंगे। 30 अप्रैल को राहुल गांधी भिंड के दौरे पर रहेंगे। इसके बाद वे 6 को झाबुआ और 7 मई को बड़वानी के दौरे पर आएंगे। 2 मई को प्रियंका गांधी का मुरैना में रोड शो होना है। प्रियंका गांधी के रोड शो का समय बदला गया है। रोड शो पहले सुबह 11 बजे प्रस्तावित था। अब इसका समय दोपहर चार बजे किया जा रहा है। प्रियंका गांधी शाम 4 बजे रायपुर से मुरैना पहुंचेंगी और कांग्रेस प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार के समर्थन में रोड शो करेंगी। मप्र में हुए पहले और दूसरे चरण के मतदान में अब तक कांग्रेस नेतृत्व के दो ही दौरे हुए हैं। 8 अप्रैल को राहुल गांधी की मंडला लोकसभा की केवलारी विधानसभा के धनौरा और शहडोल में जनसभाएं हुई। हेलीकॉप्टर का फ्यूल न भर पाने के कारण शहडोल में रात रुके। 21 अप्रैल को राहुल गांधी का सतना का दौरा प्रस्तावित था, उन्हें फूड पॉइजनिंग होने के चलते कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे सतना के दौरे पर आए और जनसभा को संबोधित किया।

संपादकीय

मुसीबत में भारतीय मसाले

अब भारतीय मसाले भी संकट में हैं। इसका कारण बाजार की प्रतिस्पर्द्धा न होकर इन मसालों में स्वास्थ्य के लिए खतरनाक रसायनों के मिश्रण का आरोप है। यही कारण है कि विदेशों में बड़ी मात्रा में निर्यात होने वाले एमडीएच और एवरेस्ट ब्रांड के मसालों पर अमेरिका में प्रतिबंध लग सकता है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार अमेरिका का फूड एंड ड्रग एडिमिनिस्ट्रेशन (एडीए) इन कंपनियों के प्रॉडक्ट्स के बारे में जानकारी जुटा रहा है। हाल में सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग ने इन कंपनियों के प्रॉडक्ट्स पर प्रतिबंध लगा दिया था। पिछले दिनों सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग ने इन कंपनियों के मसालों में हाई लेवल पेस्टिसाइड का आरोप लगाते हुए इन पर प्रतिबंध लगा दिया था। आरोप है कि इन प्रॉडक्ट्स में पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की मात्रा बहुत ज्यादा थी। यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है और इससे कैंसर होने का खतरा रहता है। इस बारे में एमडीएच और एवरेस्ट ने तत्काल सवालों का जवाब नहीं दिया। एवरेस्ट का कहना है कि उसके मसालों से स्वास्थ्य को कोई नुकसान नहीं होता है। हालांकि भारत का मसाला बोर्ड ऐक्शन में आ गया है। यह बोर्ड केंद्र सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत काम करता है। बोर्ड ने बुधवार को कहा कि सिंगापुर और हॉन्ग कॉन्ग को भेजे जाने वाले कंसाइनमेंट की वह अनिवार्य रूप से जांच की जाएगी। गौरतलब है कि एमडीएच और एवरेस्ट मसालों की भारत में ही नहीं बल्कि यूरोप, एशिया और नॉर्थ अमेरिका में काफी डिमांड है। एमडीएच मसाले का पूरा नाम महाशया दी हट्टी है। इसकी स्थापना 1959 में चुन्नी लाल गुलाटी नामक व्यवसायी ने की थी। इस कंपनी की भारत के मसाला बाजार में 12 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी है, जो देश में दूसरे नंबर का सबसे बड़ा मसाला ब्रांड है। ये 120 तरह के मसाले बेचती है। भारत की एक और बड़ी मसाला कंपनी एवरेस्ट फूड प्रॉडक्ट्स प्रा.लि. है। इसकी स्थापना वाडीलाल शाह ने 1967 में की थी। इस कंपनी को आठ बार सुपर ब्रांड का दर्जा मिल चुका है। देश मे ब्रांडेड मसाले बेचने वाली यह नंबर वन कंपनी है, जिसकी मसाला बाजार में 30 फीसदी हिस्सेदारी है। लेकिन दोनों कंपनियों के बारे में जो शिकायत आई है, वह वाकई गंभीर है। खाद्य पदार्थों में किसी भी तरह की घातक तत्वों की मिलावट अक्षम्य है। अगर मसाला कंपनियां अपने उत्पाद खपाने के लिए ऐसा कर रही हैं तो उन पर देश में भी सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। मसालों में जिस एथिलीन ऑक्साइड की मिलावट की बात की जा रही है, उसके सूंघने भर से कैंसर हो सकता है। यह बहुत गंभीर आरोप है। दोनों कंपनियां इस आरोप पर संतुष्टिकारक जवाब नहीं दे सकी हैं। इससे यही संकेत मिलता है कि कहीं कुछ गड़बड़ है। इसमे शक नहीं कि दुनिया भर में भारतीय मसालों का कोई सानी नहीं है। हमारे मसाले खाद्य पदार्थों को बहुत अलग तरह का स्वाद और फ्लेवर प्रदान करते हैं। इन्हीं की वजह से भारतीय खाने विश्व में अपनी अलग पहचान रखते हैं और कई देशों में लोकप्रिय भी हो रहे हैं। परंपरागत रूप से ये मसाले घरों में कूटकर या पीसकर बनाए जाते थे, लेकिन कंपनियों ने अब रेडिमेड मसाले बाजार में उतार दिए हैं। इससे गृहिणियों का श्रम व समय कम हुआ है। हालांकि मसालों से भोजन गरिष्ठ होता है और कई बार ज्यादा मसाले शरीर के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं। लेकिन मसालों को ज्यादा स्वादिष्ट बनाने के चक्कर में उसमें रसायन मिलाना तो अस्वीकार्य है। मसाला निर्माता कंपनियों को इसके निर्माण की प्रक्रिया में पारदर्शिता बरतना चाहिए और भारत सरकार को भी सख्त कार्रवाई कर मसालों की विश्वसनीयता कायम रखनी चाहिए।

गहराते जल-संकट से जीवन एवं कृषि खतरे में

नजरिया

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मानवीय गतिविधियों और क्रिया-कलापों के कारण दुनिया का तापमान बढ़ रहा है और इससे जलवायु में होता जा रहा परिवर्तन अब मानव जीवन के हर पहलू के साथ जलाशयों एवं नदियों के लिए खतरा बन चुका है। जलवायु परिवर्तन का खतरनाक प्रभाव गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र सहित प्रमुख जलाशयों और नदी घाटियों में कुल जल भंडारण पर खतरनाक स्तर पर महसूस किया जा रहा है, जिससे लोगों को गंभीर जल परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। केंद्रीय जल आयोग के नवीनतम आंकड़े भारत में बढ़ते इसी जल संकट की गंभीरता को ही दर्शाते हैं। आंकड़े देश भर के जलाशयों के स्तर में आई चिंताजनक गिरावट की तस्वीर उकेरते हैं। रिपोर्ट के अनुसार 25 अप्रैल 2024 तक देश में प्रमुख जलाशयों में उपलब्ध पानी में उनकी भंडारण क्षमता के अनुपात में तीस से पैंतीस प्रतिशत की गिरावट आई है। जो हाल के वर्षों की तुलना में बड़ी गिरावट है। जो सूखे जैसी स्थिति की ओर इशारा करती है। जिसके मूल में अल नीनो घटनाक्रम का प्रभाव एवं वर्षा की कमी को बताया जा रहा है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव एवं जीव-जन्तुओं के अलावा जल कृषि के सभी रूपों और अधिकांश औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं के लिये भी बेहद आवश्यक है। परंतु आज भारत गंभीर जल-संकट के साए में खड़ा है। अनियोजित औद्योगीकरण, बढ़ता प्रदूषण, घटते रेगिस्तान एवं ग्लेशियर, नदियों के जलस्तर में गिरावट, वर्षा की कमी, पर्यावरण विनाश, प्रकृति के शोषण और इनके दुरुपयोग के प्रति असंवेदनशीलता भारत को एक बड़े जल संकट की ओर ले जा रही है।

भारत भर में 150 प्रमुख जलाशयों में जल स्तर वर्तमान में 31 प्रतिशत है, दक्षिण भारत में सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र है, जिसके 42 जलाशय वर्तमान में केवल 17 प्रतिशत क्षमता पर हैं। यह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में देखी गई सबसे कम जल क्षमता का प्रतीक है। स्थिति अन्य क्षेत्रों में भी चिंताजनक है, पश्चिम में 34 प्रतिशत और उत्तर में 32.5 प्रतिशत जलाशय क्षमता है। हालाँकि, पूर्वी और मध्य भारत की स्थिति बेहतर हैं, उनके पास अपने जलाशयों की सक्रिय क्षमता का क्रमशः 40.6 प्रतिशत और 40 प्रतिशत है, पिछले वर्ष वर्षा कम थी, विशेष रूप से दक्षिण भारत में, 2023 का मानसून असमान था क्योंकि यह अल नीनो वर्ष भी था - एक जलवायु पैटर्न जो आम तौर पर इस क्षेत्र में गर्म और शुष्क परिस्थितियों का कारण बनता है। इससे काफी चिंता पैदा हुई है। वर्तमान में, सिंचाई भी प्रभावित हो रही है, और देश भर में पीने के पानी की उपलब्धता और जल विद्युत उत्पादन पर प्रभाव के बारे में चिंताएं बढ़ रही हैं। भविष्य को देखते हुए, आने वाले महीनों में और अधिक गर्मी पड़ने की आशंका है, जो दर्शाता है कि आने वाले दिनों में बड़ा जल संकट उभरने वाला है।

लंबे समय तक पर्याप्त बारिश न होने के कारण जल भंडारण में यह कमी आई है। जिसके चलते कई क्षेत्रों में सूखे जैसे और असुरक्षित हालात पैदा हो गये हैं। जिससे विभिन्न फसलों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इसका एक कारण यह भी है कि देश की आधी कृषि योग्य भूमि आज भी मानसूनी बारिश के निर्भर है। ऐसे में सामान्य मानसून की स्थिति पर कृषि का भविष्य पूरी तरह निर्भर करता है। वास्तव में लगातार बढ़ती गर्मी के कारण जल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है। इसके गंभीर परिणामों के चलते आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में पानी की कमी ने गंभीर रूप धारण कर लिया है। देश का आईटी हब बेंगलुरु गंभीर जल संकट से जूझ रहा है। जिसका असर न केवल कृषि गतिविधियों पर पड़ रहा है बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी भी बुरी तरह प्रभावित हो रही है। ऐसे में किसी आसन्न संकट से निपटने के लिये जल संरक्षण के प्रयास घरों से लेकर तमाम कृषि पद्धतियों और औद्योगिक कार्यों तक में तेज करने की जरूरत है। जल भंडारण और वितरण दक्षता में सुधार के लिये पानी के बुनियादी ढांचे और प्रबंधन प्रणालियों में बड़े निवेश की तात्कालिक जरूरत भी है। इसके साथ ही जल संरक्षण की परंपरागत तकनीकों को भी बढ़ावा देने की जरूरत है। साथ ही आम लोगों को प्रकृति के इस बहुमूल्य संसाधन के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा हेतु प्रेरित करने के लिए जनजागरण अभियान चलाने की जरूरत है।

पानी के संरक्षण और समुचित उपलब्धता को सुनिश्चित कर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या का भी समाधान निकाल सकते हैं। आप सोच सकते हैं कि एक मनुष्य अपने जीवन काल में कितने पानी का उपयोग करता है, किंतु क्या वह इतने पानी को बचाने का प्रयास करता है? जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत वृद्धि हुई है और सूखे की अवधि में 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। पानी धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिए आधारभूत आवश्यकता है। आबादी में वृद्धि के साथ पानी की खपत बेतहाशा बढ़ी है, लेकिन पृथ्वी पर साफ पानी की मात्रा कम हो रही है। जलवायु परिवर्तन और धरती के बढ़ते तापमान ने इस समस्या को गंभीर संकट बना दिया है। दुनिया के कई हिस्सों की तरह भारत भी जल संकट का सामना कर रहा है। वैश्विक जनसंख्या का 18 प्रतिशत हिस्सा भारत में निवास करता है, लेकिन चार प्रतिशत जल संसाधन ही हमें उपलब्ध है। भारत में जल-संकट की समस्या से निपटने के लिये प्राचीन समय से जो प्रयत्न किये गये है, उन्हीं प्रयत्नों को व्यापक स्तर पर अपनाने एवं जल-संरक्षण क्रांति को घटित करने की अपेक्षा है।

सदियों से निर्मल जल का स्त्रोत बनी रहीं नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, अब उन पर जलवायु परिवर्तन का घातक प्रभाव पड़ने लगा है। जल संचयन तंत्र बिगड़ रहा है, और भू-जल स्तर लगातार घट रहा है। धरती पर सुरक्षित और पीने के पानी के बहुत कम प्रतिशत के आंकलन के द्वारा जल संरक्षण या जल बचाओ अभियान हम सभी के लिये बहुत जरूरी हो चुका है। जल को बचाने में अधिक कार्यक्षमता लाने के लिये सभी औद्योगिक बिल्डिंगें, अपार्टमेंट्स, स्कूल, अस्पतालों आदि में बिल्डरों के द्वारा उचित जल प्रबंधन व्यवस्था को बढ़ावा देना चाहिये। देश के सात राज्यों के 8220 ग्राम पंचायतों में भूजल प्रबंधनों के लिए अटल भूजल योजना चल रही है। स्थानीय समुदायों के नेतृत्व में चलने वाला यह दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। साथ ही, नल से जल, नदियों की सफाई, अतिक्रमण हटाने जैसे प्रयास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हो रहे हैं। हमारे यहां जल बचाने के मुख्य साधन हैं नदी, ताल एवं कूप। इन्हें अपनाओं, इनकी रक्षा करो, इन्हें अभय दो, इन्हें मरुस्थल के हवाले न करो। गाँव के स्तर पर लोगों के द्वारा बरसात के पानी को इकट्ठा करने की शुरुआत करनी चाहिये। उचित रख-रखाव के साथ छोटे या बड़े तालाबों को बनाकर या उनका जीर्णोद्धार करके बरसात के पानी को बचाया जा सकता है। धरती के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है। परंतु, पीने योग्य जल मात्र तीन प्रतिशत है। इसमें से भी मात्र एक प्रतिशत मीठे जल का ही वास्तव में हम उपयोग कर पाते हैं।

पानी का इस्तेमाल करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है। जल का संकट एवं विकट स्थितियां अति प्राचीन समय से बनी हुई है। इसी कारण राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि प्रांतों में जल संरक्षण के लिये नाड़ी, तालाब, जोहड़, बन्धा, सागर, समंद एवं सरोवर आदि बनाने की प्राचीन परम्परा रही है। जहाँ प्रकृति एवं संस्कृति परस्पर एक दूसरे से समायोजित रही हैं। राजस्थान के किले तो वैसे ही प्रसिद्ध हैं पर इनका जल प्रबंधन विशेष रूप से देखने योग्य है और अनुकरणीय भी हैं। जल संचयन की परम्परा वहाँ के सामाजिक ढाँचे से जुड़ी हुई हैं तथा जल के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण के कारण ही प्राकृतिक जलस्रोतों को पूजा जाता है।

भारतीय रेल - सपने और हकीकत

मुद्दा

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

क्या भारतीय रेल मंत्रालय लोकलुभावन विज्ञापन जारी कर अपनी छवि गढ़ने की क़वायद में जुटा हुआ है। वंदेभारत श्रेणी की अलग अलग दिशाओं को जाने वाले एक एक रैक को प्रधानमंत्री द्वारा झंडी दिखाकर रवाना किया जाना और इन उद्घाटन समारोहों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शिरकत के चलते इस इवेंट मैनेजमेंट पर जनता के करोड़ों रूपये ख़र्च करना हो या देश के कई रेलवे स्टेशंस का सौंदर्यीकरण या उनका विस्तार करना हो या स्टेशन के मुख्य द्वारा पर ऊँचे ऊँचे राष्ट्रीय ध्वज स्थापित करना हो, इनमें से किसी बात का सम्बन्ध सामान्य रेल यात्रियों को मिलने वाली सुविधाओं से हरगिज़ नहीं है। रेल यात्री को सबसे पहले सुरक्षित रेल यात्रा की दरकार है। समय पर ट्रेनों का आवागमन रेल यात्रियों की प्राथमिकताओं में एक है। प्रत्येक यात्री को आरक्षण मिले,उसकी वेटिंग कन्फ़र्म हो, स्वच्छ वाशरूम व वाशबेसिन,रेल से लेकर प्लेटफ़ॉर्म तक यात्रियों के सामान की सुरक्षा आदि यात्रियों की पहली ज़रूरतें हैं। रेल मंत्रालय द्वारा अपनी पीठ थपथपाने वाले विज्ञापन अख़बारों में प्रकाशित करा देने से रेल यात्रियों का क्या भला होगा? रेल स्टेशन के सौंदर्यीकरण के जो निर्माण कार्य चल भी रहे हैं उनकी गुणवत्ता देखकर ही पता चलता है कि 'खूब खाया और खिलाया' जा रहा है।

पहले रेल यात्री सुरक्षित व आरामदेह यात्रा की आस में एसी के तृतीय या द्वितीय श्रेणी में आरक्षण कराकर यात्रा किया करते थे। परन्तु अब जैसे जैसे सरकार ट्रेन में सामान्य श्रेणी व स्लीपर क्लास डिब्बों की संख्या कम कर ,ए सी कोच बढ़ाती जा रही है वैसे वैसे स्लीपर व सामान्य श्रेणी के यात्रियों की समस्याओं में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। हालात तो अब ऐसे हो रहे हैं कि स्लीपर क्लास में वेटिंग टिकट कन्फ़र्म न हो पाने वाले यात्री हों या सामान्य श्रेणी यात्री, अब वे सीधे ए सी क्लास रुख़ करते हैं। वे टिकट निरीक्षक को कुछ 'नज़राना' थमा कर स्वयं को वातानुकूलित श्रेणी में यात्रा करने के लिये अधिकृत यात्री मान लेते हैं। उसके बाद एसी कोच और उसके अधिकृत यात्रियों को जिस दुर्दशा का सामना करना पड़ता है उसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। भारतीय रेल इतिहास में वातानुकूलित श्रेणी के यात्रियों की ऐसी दुर्दशा पहले कभी नहीं देखी गयी।

गत 15 अप्रैल को अमृतसर से जयनगर जाने वाली ट्रेन संख्या 14650 के लगभग सभी ए सी कोच ख़ासकर कोच संख्या रू ऐसी दुर्व्यवस्था का शिकार था कि पूरे डिब्बे में प्रवेश द्वारा व वाशरूम से लेकर कोच के भीतर पूरी गैलरी में यहाँ तक की साइड की बर्थ के बीच में भी अनिधकृत यात्री खचाखच भरे हुए थे। वातानुकूलित श्रेणी के अधिकृत यात्रियों का शौचालय या वाश बेसिन तक पहुंचना असंभव था। अनधिकृत यात्रियों का केवल कोच की गैलरी या कोच के बाहरी हिस्से पर ही नहीं बल्कि शौचालय तक में पूरा क़ब्ज़ा था। अम्बाला से लेकर शाहगंज तक यानी शाम लगभग 6 बजे से लेकर अगले दिन 1 बजे तक कोच की दुर्दशा का यही आलम था। कभी टिकट निरीक्षक किसी यात्री को थप्पड़ लगाता दिखाई दिया तो कभी किसी यात्री से पैसे ऐंठते। सारी रात कोच के आरक्षित अधिकृत यात्री घुसपैठी यात्रियों से लड़ते झगड़ते रहे। आरक्षण होने के बावजूद कोई भी यात्री सारी रात सो नहीं सका। कई यात्रियों ने चलती ट्रेन में ही फ़ोन कर शिकायत भी दर्ज की। मुरादाबाद में एक महिला पुलिस चीख़ती चिल्लाती बड़ी मुश्किल से कोच में घुसी और उन बर्थ पर गयी जहाँ से शिकायत की गयी थी। वह महिला पुलिस बजाये फ़ालतू सवारियों को नीचे उतारने के शिकायतकर्ता से यह कहती सुनी गयी कि 'आइये मैं आपको वाशरूम तक पहुंचा देती हूँ'। टिकट निरीक्षक भी अत्यधिक भीड़ देख अपना वसूली मिशन पूरा कर दुबारा डिब्बे में ही मुड़कर नहीं आया। इसी भीड़ के चलते पानी चाय आदि की आपूर्ति करने वाले हाकर्स भी नहीं आ जा सके।

यह हाल केवल 14650 का ही नहीं था बल्कि मुंबई से जयनगर जाने वाली 11061, पवन एक्सप्रेस के एसी श्रेणी के यात्री भी उसी दिन इसी तरह की त्रासदी झेल रहे थे। मुंबई से लेकर प्रयागराज तक इस ट्रेन के एसी कोच भी घुसपैठी यात्रियों से भरे पड़े थे। इसमें भी आरक्षित अधिकृत यात्री शौचालय तक नहीं पहुंच पा रहे थे। इस तरह के घुसपैठी यात्री केवल आरक्षित अधिकृत यात्री की सुख सुविधा में ही बाधक नहीं बनते बल्कि वे शौचालय और वाशबेसिन को भी इतना गन्दा कर देते हैं कि यदि धक्का-मुक्की कर कोई यात्री शौचालय और वाशबेसिन तक पहुँच भी जाये तो उसे इतनी गंदिगी का सामना करना पड़ता है कि वह शौचालय या वाशबेसिन का प्रयोग ही नहीं कर सकता। किसी सफ़ाई कर्मचारी के आने और सफ़ाई करने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता। सोचा जा सकता है जब शिकायत करने के बावजूद पुलिस घुसपैठी यात्रियों को बाहर नहीं निकाल सकी, टिकट निरीक्षक मैदान छोड़ भाग खड़ा हुआ तो यात्रियों की सुध लेने वाला और उनके सामान की रक्षा करने वाला आख़िर कौन है?

रेल मंत्रालय के इवेंट मैनेजमेंट या स्टेशंस को चमकाने की क़वायद रेल यात्रियों की उपरोक्त समस्या का समाधान भला कैसे हो सकती है ? अपने वित्तीय आय बढ़ाने के लिये विभाग एसी कोच की संख्या बढ़ा तो रहा है परन्तु वह शत प्रतिशत वेटिंग टिकट कन्फ़र्म करने की कोई तरकीब नहीं ढूंढता। उसके पास ए सी कोच में घुसपैठी यात्रियों के प्रवेश को रोकने और आरक्षित अधिकृत यात्री की सुखद व सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने की कोई तरकीब नहीं। देश के अनेक हिस्सों में रेल यात्री इसी दुर्दशा का शिकार हैं। परन्तु सरकार है कि विज्ञापनों के बल पर अपनी पीठ थपथपा कर और तरह तरह की लोकलुभावन बातें कर या मुफ़्त का राशन बांटकर या फिर धर्म ध्वजा बुलंद कर आम लोगों को अँधेरे में रखे हुये है। गोया भारतीय रेल देशवासियों को सपने तो बुलेट ट्रेन और स्टेशन के आधुनिकीकरण के दिखाती है जबकि यात्रियों के सामने पेश आने वाली हक़ीक़त कुछ और है।

मौसम का तकाजा है

कटाक्ष

सुधीर देशपांडे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मौसम का तकाजा ही, सिर पर बर्फ, मुँह में शक्कर और पाँव में चक्कर का है. पर देखने में आता है कि ऐसे मौसम में नीम भी फल फूल रहा है. महुआ की तो बात ही और है, जो अभी सर चढ़ कर बोलने वाला है. कुछ है जो चील्ड बियर की पेशकश भी हो रही है. गन्ने के रस की चरखियाँ मधुशाला बन गई है और बच्चन साहब याद आने लगे है. मयखाने की याद उनको रह रह कर आ रही है, जिनके लिए मौसम कोई भी हो, बहाना कुछ भी हो ठिकाना एक ही है.

तो कह रहा था कि सर पर बर्फ रखने के और मुँह में शक्कर रखने के बाद भी जिव्हा बावरी हुई जा रही है. दिमाग में न जाने क्या चल रहा है. लक्ष्य एक है परम पद. ना ना वह परम पद नहीं जिसे कबीर पाना चाहते थे. एक समर है सामने जो जीतना है. एक आग का दरिया है और डूब के जाना है.

तो बात हो रही थी मौसम की. मौसम का मिजाज समझने की कोशिश में हर कोई लगा है. पर मौसम खुद को ही समझ पा रहा है या नहीं यह भी समझना हम को बाकी है. कभी आँख तरेरता है तो कभी झमाझम बरस पड़ता है. पल में तोला पल में माशा. कभी आंधी ऐसी कि सब कुछ बदल कर ही दम लेगी. अभी यह भी तय नहीं कि यह आंधी है किसकी. इन आंधियों में किसका छप्पर टिकना है और किसकी जमीन बिछड़नी है.

अब रही बात पांव में चक्कर की तो यह भी मौसम का तकाजा है. ये चक्कर जिस कारण है वह भी ऐसा चक्कर है लगभग पांच साल में एक बार तो जरूर आता है. ज्यादा धूप में घूमने से भी चक्कर की शिकायत हो ही जाती है. ये और बात है कि आदमी इस चक्कर के फेर में चक्कर घिन्नी बन जाता है.

साधु गर्मी और मौसम चुनाव के मौसम के बाद ही बरसात होती है. पर इस बार तो देखो, भर गरमी और चुनाव के मौसम में बरसात हो रही है. बादल तो पानी बरस ही रहे हैं, इधर पार्टियाँ चुनावी वादों की बरसात कर रही हैं. घमासान मचा है. कौन ज्यादा? की होड़ मची है.

आम आदमी का क्या वह तो तब भी भीगता है जब पानी बरसे और और तब भीगे जब वादों की बरसात हो. उस के मकान की छतें तो आज भी चूती हैं.

वादों की बरसात उसके सपनों पर पत्थर पड़ने वाली सिद्ध न हो जाए इसके लिए तो अपना कर्तव्य निभाना ही चाहिए. आखिर इसके अलावा वह कर ही क्या सकता है कि पाँच साल में एक मौका हाथ आने पर वोट डाल आए. वोट डालने जाए तो सही पर ऐसे दल ऐसे उम्मीदवार को चुने जो उस के और देश के भविष्य की अपेक्षा पर खरा उतरे. वरना एक कंबल, एक थैली, एक थाली,एक बोतल, एक उन्माद और ढेरे सारे वादों के तले दबकर अपने सपनों को चूर चूर न कर ले.

तो सिर पर बर्फ रखकर सोचें ताकि पछतावा न हो.

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश उपाध्याय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

काश ! सर्वे यह भी बताता

जितना विकट एक व्यक्ति के लिए किसी चुनाव में राजनीतिक दल का टिकट प्राप्त करना होता है, उससे अधिक विकट किसी दल के लिए प्रत्याशी का चयन करना होता है. किसी भी पार्टी की पहली और अंतिम प्राथमिकता होती है- जीत की सम्भावना. इस जीत की सम्भावना के अनेको आधार तत्व हो सकते है. चुनाव जब महंगे होंगे तो प्रत्याशी चयन का एक बडा आधार धन खर्च करने की क्षमता भी होगा ही. किस क्षेत्र में किस जाति, सम्प्रदाय का बाहुल्य है तथा इस आधार पर एकतरफा वोटिंग की सम्भावना है तो प्रत्याशी चयन में जाति / सम्प्रदाय का आधार भी स्वाभाविक ही माना जाएगा. अब यदि सभी प्रमुख दल इस आधार पर प्रत्याशी का चयन करे तो जाति बंधुओं के समक्ष धर्मसंकट तो उत्पन्न होना ही है. इसके प्रभाव से जातीय संगठनों में भी ग्रुप (समूह) बनना और फिर संगठनों के आंतरिक चुनावों में इस सबका पार्श्व प्रभाव (साइड इफेक्ट) दिखाई देता ही है. चूंकि चुनाव लड़े जाते हैं, इसमे बाहुबल का भी अपना महत्व होता है और यह भी प्रत्याशी चयन का एक आधार हो सकता है. जीत की सम्भावना के लिए और भी कई आयाम हो सकते है जो प्रत्याशी चयन में सहायक होते हैं यथा प्रत्याशी की छवि, वाग्क्षमता, नेतृत्व क्षमता आदि आदि. विभिन्न दल इन आधारों के अतिरिक्त पार्टी व संगठन की विचारधारा के प्रति सहमति, समर्पण, निष्ठा, प्रतिबद्धता आदि बिंदुओ को भी ध्यान में रखते हैं. दलों का जब विस्तार हो जाता है तो इन आधारो पर चयन करना थोड़ा कठिन हो जाता है. हालाकि तकनीक ने डाटा संग्रह और विश्लेषण में सहायक की भूमिका का निर्वाह कर इसे काफी आसान बना दिया है. बाजार के युग में व्यवसाय की नई सम्भावनाओं ने भी इस ओर ध्यान दिया है तथा कई सर्वे एजेंसियां सामने आई है. यह एजेंसियां स्थानीय, प्रांतीय, केंद्रीय के अतिरिक्त नेतृत्व के लिए भी कार्य करती है. सेम्पल सर्वे, पब्लिक ओपिनियन, डाटा संग्रह, डाटा विश्लेषण के आधार के अपने निष्कर्षो से अपने नियोक्ता को अवगत कराती है. सब निष्कर्ष एक जैसे हो जरुरी नही है और यह अलग अलग निष्कर्ष निर्णय कर्ताओं की बड़ी मदद करते हैं तथा उन्हे धर्म संकट से उबारते भी हैं. बड़े स्तर पर दल बदल के युग में टिकट वितरण में इस तत्व का भी अपना महत्व है और इसमे इन एजेंसियों की सर्वे रिपोर्ट व निष्कर्षो का प्रत्यक्ष सम्बंध शायद ही हो, परोक्ष हो तो कहना मुश्किल है.

प्रत्याशी चयन की इतनी लम्बी कवायद और टिकट प्राप्ति के बाद यदि कोई व्यक्ति दल बदल कर दूसरे दल का टिकट प्राप्त कर ले तो दल के पास प्रत्याशी बदलने का विकल्प रहता है. फार्म भरने की तारीख के बाद यदि कोई व्यक्ति तकनीकी त्रुटी जाने-अनजाने कर दे और फार्म निरस्त हो जाए तो दल के लिए दूसरे दल या निर्दलीय को समर्थन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहता है. एक नई स्थिति और हो तथा अधिकृत प्रत्याशी अंतिम दिवस पर अपना नामांकन फार्म वापस लेले तो पार्टी के तोते उड़ना जैसा ही है.

काश ! कोई ऐसी एजेंसी होती जो ऐसे व्यक्ति व व्यवहार का स्केन कर इन स्थितियों का पूर्वानुमान कर सकती और दलों को ऐसे हालातों से बचा सकती. लोकतंत्र के विस्तार व संरक्षण के लिए ऐसी एजेंसी की सफलता की अपार सम्भावनाएं आज दिखाई देती हैं.

दादा साहेब फाल्के की जयंती

योगेश कुमार गोयल

(लेखक 34 वर्षों से साहित्य एवं पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

भारतीय सिनेमा का शिखर सम्मान है दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

दादा साहेब फाल्के ने ही रखी थी भारतीय सिनेमा की नींव

नासिक के एक संस्कृत विद्वान गोविंद सदाशिव फाल्के उर्फ दाजीशास्त्री के घर जन्मे धुन्धी राज गोविन्द फाल्के, जिन्हें बाद में दादा साहेब फाल्के के नाम से जाना गया, एक डायरेक्टर के साथ-साथ जाने-माने प्रोड्यूसर और स्क्रीनराइटर भी थे। महाराष्ट्र में नासिक के निकट त्रयंबकेश्वर में 30 अप्रैल 1870 को जन्मे दादा साहेब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक माना जाता है, जो केवल एक फिल्म निर्देशक ही नहीं थे बल्कि ऑलराउंडर थे। हालांकि फिल्मों के क्षेत्र में स्थापित होने से पहले फाल्के साहब ने कई अन्य क्षेत्रों में भी किस्मत आजमाई। 1895 में उन्होंने एक पेशेवर फोटोग्राफर बनने का निर्णय लिया। वह ऐसा दौर था, जब यह मिथक फैला हुआ था कि कैमरा किसी व्यक्ति के शरीर से सारी ऊर्जा खींच लेता है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। इसी धारणा के कारण उन्हें फोटोग्राफी के कैरियर में लोगों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। उसके बाद उन्होंने नाटक कम्पनियों के लिए मंच के पर्दों को रंगने का व्यवसाय शुरू किया, जिससे उन्हें नाटक निर्माण में कुछ बुनियादी प्रशिक्षण मिला और नाटकों में कुछ छोटी भूमिकाएं भी मिली। उन्होंने एक जर्मन जादूगर से जादू के कुछ करतब सीखे, जिससे उन्हें फिल्म निर्माण में ट्रिक फोटोग्राफी का उपयोग करने में मदद मिली।

दादा साहेब फाल्के की पहली फिल्म थी 'राजा हरिश्चन्द्र', जिसे 'भारत की पहली फुल लेंथ फीचर फिल्म' का दर्जा हासिल है। उस बहुत पुराने दौर में भी फाल्के साहब की फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' का बजट 15 हजार रुपये था। 3 मई 1913 को रिलीज हुई वह फिल्म भारतीय दर्शकों में बहुत लोकप्रिय हुई थी और उसकी सफलता के बाद से ही दादा साहेब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक कहा जाने लगा। 'राजा हरिश्चन्द्र' की जबरदस्त सफलता के बाद फाल्के साहेब का हौंसला इतना बढ़ा कि उन्होंने अपने 19 वर्ष लंबे कैरियर में एक के बाद एक 100 से भी ज्यादा फिल्मों का निर्माण किया, जिनमें 95 फीचर फिल्में और 27 लघु फिल्में शामिल थी। उनकी बनाई धार्मिक फिल्में तो दर्शकों द्वारा बेहद पसंद की गई। दादा साहेब की जिंदगी में वह दिन उनके कैरियर का टर्निंग प्वाइंट माना जाता है, जब उन्होंने 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' नामक एक मूक फिल्म देखी थी, जिसे देखने के बाद उनके मन में कई विचार आए। वह फिल्म देखने के पश्चात् उन्होंने दो महीने तक शहर में प्रदर्शित सारी फिल्में देखी और तय किया कि वे फिल्में ही बनाएंगे। आखिरकार उन्होंने अपनी पत्नी से कुछ पैसे उधार लेकर अपनी पहली मूक फिल्म बनाई।

फाल्के साहेब अक्सर कहा करते थे कि फिल्में मनोरंजन का सबसे उत्तम माध्यम हैं, साथ ही ज्ञानवर्द्धन के लिए भी बेहतरीन माध्यम हैं। उनका मानना था कि मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन पर ही कोई भी फिल्म टिकी होती है। उनकी इसी सोच ने उन्हें एक ऊंचे दर्जे के फिल्मकार के रूप में स्थापित किया। उनकी फिल्में निर्माण व तकनीकी दृष्टि से बेहतरीन थी, जिसकी वजह यही थी कि फिल्मों की पटकथा, लेखन, चित्रांकन, कला निर्देशन, सम्पादन, प्रोसेसिंग, डबलपिंग, प्रिंटिंग इत्यादि सभी काम वे स्वयं देखते थे और कलाकारों की वेशभूषा का चयन भी अपने हिसाब से ही किया करते थे। फिल्म निर्माण के बाद फिल्मों के वितरण

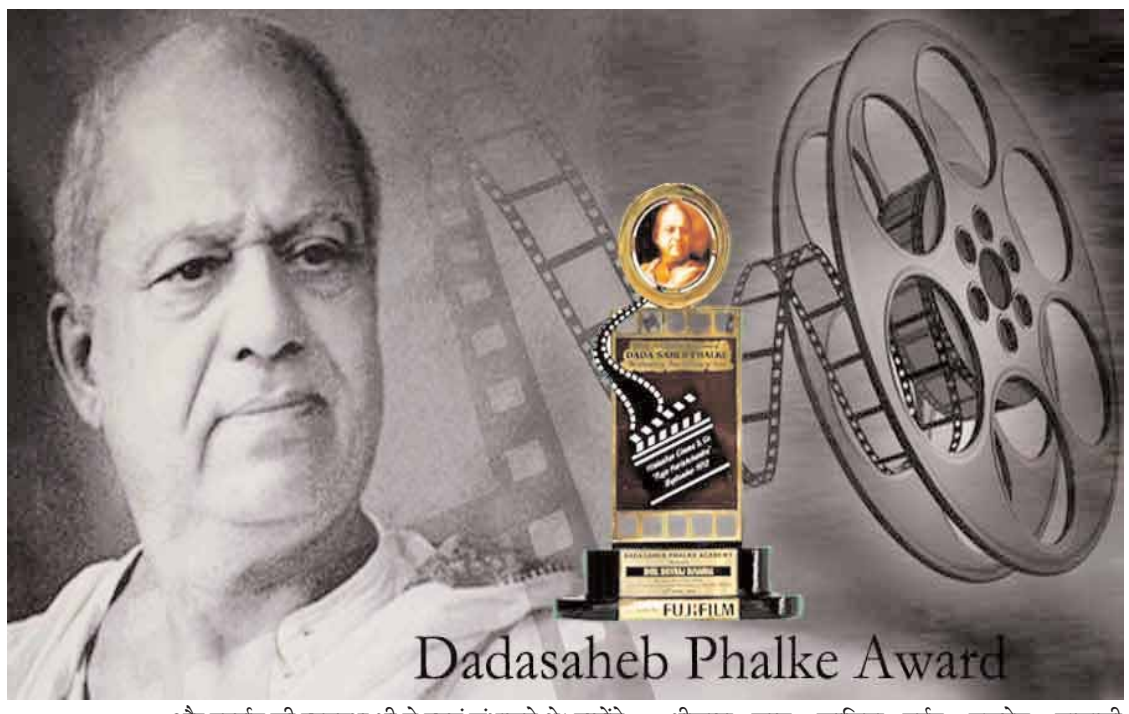

और प्रदर्शन की व्यवस्था भी वे स्वयं संभालते थे। उन्होंने अपनी कुछ फिल्मों में महिलाओं को भी कार्य करने का अवसर दिया। उनकी एक फिल्म 'भस्मासुर मोहिनी' में दुर्गा और कमला नामक दो अभिनेत्रियों ने कार्य किया था। दादा साहेब की आखिरी मूक फिल्म 'सेतुबंधन' थी और उन्होंने कोल्हापुर नरेश के आग्रह पर 1937 में अपनी पहली और अंतिम बोलती फिल्म 'गंगावतरण' बनाई थी। दादा साहेब द्वारा बनाई गई फिल्मों में राजा हरिश्चंद्र, मोहिनी भस्मासुर, सत्यवान सावित्री, लंका दहन, श्रीकृष्ण जन्म, कालिया मर्दन, बुद्धदेव, बालाजी निम्बारकर, भक्त प्रहलाद, भक्त सुदामा, रूक्मिणी हरण, रुक्मांगदा मोहिनी, द्रौपदी वस्त्रहरण, हनुमान जन्म, नल दमयंती, भक्त दामाजी, परशुराम, श्रीकृष्ण शिष्टई, काचा देवयानी, चन्द्रहास, मालती माधव, मालविकाग्निमित्र, वसंत सेना, बोलती तपेली, संत मीराबाई, कबीर कमल, सेतु बंधन, गंगावतरण इत्यादि प्रमुख थी। 16 फरवरी 1944 को यह महान् शख्सियत दुनिया को अलविदा कहते हुए अनंत शून्य में विलीन हो गई लेकिन भारतीय सिनेमा को शानदार फिल्मों की ऐसी सौगात सौंप गई, जिनकी महत्ता आने वाली सदियों में भी कम नहीं होगी। 1971 में भारतीय डाक विभाग ने दादा फाल्के के सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया था।

फिल्मों में भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहेब के अविस्मरणीय योगदान के मद्देनजर उनकी स्मृति को जीवंत बनाए रखने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा उनके जन्म शताब्दी वर्ष 1969 में 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार' की स्थापना की गई और तभी से प्रतिवर्ष भारतीय सिनेमा के विकास में आजीवन उत्कृष्ट योगदान देने वाली किसी एक शख्सियत को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता रहा है। यह पुरस्कार फिल्म इंडस्ट्री के तमाम फिल्मकारों, निर्देशकों और कलाकारों की आजीवन उपलब्धियों का समग्र मूल्यांकन करने के पश्चात् भारतीय सिनेमा के विकास में उत्कृष्ट योगदान देने वाले किसी एक फिल्मकार, निर्देशक अथवा कलाकार को प्रदान किया जाता है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा स्थापित संगठन 'फिल्म महोत्सव निदेशालय' द्वारा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में प्रतिवर्ष दादा साहेब फाल्के के नाम पर यह पुरस्कार भारतीय सिनेमा और उसके विकास में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को वर्ष 1969 से नियमित प्रदान किया जा रहा है, जिसे भारतीय सिने जगत के सर्वोच्च पुरस्कार का दर्जा प्राप्त है। अब तक यह प्रतिष्ठित सम्मान अमिताभ बच्चन, विनोद खन्ना, मनोज कुमार, पृथ्वीराज कपूर, बी आर चोपड़ा, श्याम बेनेगल, देवानंद, शशि कपूर, लता मंगेशकर, मन्ना डे, गुलजार, रजनीकांत, प्राण सहित कई नामी कलाकारों को मिल चुका है। वर्तमान में इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाली शख्सियत को दस लाख रुपये नकद, स्वर्ण कमल पदक एवं शाल प्रदान की जाती है।

पर्यावरण

सपना सीपी साहू 'स्वप्निल'

मिट्टी के मटके का पानी अमृत से कम नहीं

मिट्टी में जन्मे मरे, मिट्टी बड़ी अमूल्य।
मिट्टी देती जीविका, मिट्टी ईश्वर तुल्य।।

वास्तव में मिट्टी प्रकृति का ऐसा स्त्रोत, जिसे दिनचर्या में शामिल करने पर हमें लाभ ही लाभ है। तीक्ष्ण गर्मी में तो मिट्टी के मटके का पानी अमृत से कम नहीं। भारतीय परम्पराओं में मिट्टी के पात्रों का प्रयोग सुख-दुख के अवसरों पर किया जाता रहा है। भारतीय जन अप्रैल माह विशेषतः अक्षय तृतीय पर नए मटके को खरीदते है क्योंकि इसे कलश स्वरूप सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ महीने की तपती गर्मी में तो सूखे होंठ, कंठ के लिए ठंडे पानी की चाह पहली जरूरत होती है। इसके लिए महंगे-महंगे फ्रिज, वाटर कूलर, फिल्टर की माँग भी बाजारों में बढ़ती है। लेकिन कई स्वास्थ शोध सिद्ध कर चुके है कि इलेक्ट्रीसिटी से मिलने वाला ठंडा पानी भले ही ज्यादा ठंडा हो पर उतना सेहतमंद नहीं जितना मिट्टी के मटके का पानी होता है।

चलिए हम एक दृष्टि डालते है मिट्टी के पात्रों के उपयोग से जुड़े लाभों पर। मिट्टी के मटके यांत्रिकी से चलने वाले पात्रों से बहुत सस्ते और प्रदूषण रहित होते है। मृदा के गुणों के कारण मिट्टी के मटकों में भरा पानी विषैले पदार्थो को सोख लेता है। इसमें भरा जल प्राकृतिक रूप से निर्मल, विटामिन्स बी, सी और मिनरल्स से भरपूर होता है। यह हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में कारगर है। मिट्टी के पात्र का पानी प्राकृतिक रूप से शीतल होता है इसलिए इसके सेवन से वात, पित, कफ का संतुलन शरीर में बना रहता है।

अक्सर देखने में आता है और जिसकी पुष्टि ईएनटी चिकित्सक भी करते है कि फ्रिज का पानी पीने से गले के रोग, कफ-जुकाम आदि जैसी एलर्जी की समस्याएं उत्पन्न होती है। वही मटके का पानी विषैले तत्वों से रहित होने के साथ शरीर के सभी अंगों के लिए फायदेमंद है। मटके का पानी गर्मी में तो पेट के लिए वरदान है। इसका सेवन पाचन क्रिया को दुरुस्त बनाता है। इसके सेवन से पेट खराब नहीं होता और न ही कब्जियत की समस्या होती है। एसिडीटी और उदर जलन में भी यह बहुत राहत देता है। मटके के पानी का उपयोग त्वचा पर कील-मुँहासे, खारिश नहीं होने देता। इसके जल को धूप में झुलसी त्वचा और अलाई पर लगाया जाए तो ठंडक मिलती है। इसका बराबर सेवन करने से त्वचा की चमक भी बढ़ती है। इसे पीने से शरीर में टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन्स का स्तर भी बढ़ता है।

मिट्टी के क्षारीय तत्व और पानी के गुणधर्म मिलकर संतुलित पीएच लेवल को तैयार करते है शरीर की नसों में ऊर्जा बनी रहती है। लकवा, रक्त अल्पता (एनीमिया), रक्तचाप (ब्लडप्रेशर),

सिरदर्द, थकान जैसी समस्याओं में भी यह बेहद लाभकारी है। गर्मियों में लू लगने पर, दमे के रोगियों व हृदय रोगियों के लिए इसका सेवन स्वास्थ की दृष्टि से बेहतर होता है। मिट्टी की तासिर सर्द और महक सौंधी होती है जिससे यह गर्भवती महिलाओं के साथ बच्चों के लिए भी तृप्तिदायक है। वैद्य, चिकित्सक तो फ्रिज के पानी की जगह, मटके के पानी से दवाई, औषधि लेने की सलाह देते है। इतने फायदों को देखते हुए हम कह सकते है कि मिट्टी के बर्तन में रखा पानी तन, मन, मस्तिष्क की सभी बीमारियों में एक रामबाण उपाय है।

आजकल तो मिट्टी के मटके, सुराही, बोतलें आदि बहुत सुंदर रंग, बेलबूटों के साथ, विभिन्न आकार-प्रकार में मिलने लगे है। इतने उपयोगी मिट्टी के पात्र खरीदते समय कुछ सावधानी रखना बेहतर होगा क्योंकि आधुनिकता व सुंदरता प्राथमिक होने के चलते अब मटके मशीनों द्वारा कास्टिंग विधि से केमिकल और सिलीकेन सोड़ा डालकर बनाए जा रहे है जो स्वास्थ के लिए उतने ठीक नहीं जितने चाक पर हाथ से बने बर्तन है। वैसे, यह बर्तन अधिक चिकने और चमकीले है। लेकिन वे केमिकल युक्त महक वाले भी है। भले ही मशीन से बनने वाले पात्र आकर्षित करते है पर स्मरण रखें कि वे देशी तरीके से बनने वाले पात्रों जितने गुणकारी नहीं है।

मिट्टी के मटके राजस्थान राज्य के चुनार गांव तथा गुजरात राज्य के मोरबी, वांकानेर शहरों से पूरे भारत में उपलब्ध होने के साथ विदेशों में भी निर्यात होते है। ये सुंदर रंग रूप के कारण रसोई की सुंदरता को भी द्विगुणित करते है। मौसम बदलने पर इनका उपयोग नहीं होने पर इन मटकों में मिट्टी और बालूरेत डालकर पौधे लगाए जा सकते है। इससे ये पर्यावरण संरक्षण में भी अनुकूल है। इसके अतिरिक्त हमारा मिट्टी के पात्रों को उपयोग में लेना भारतीय लघु रोजगार को बढ़ावा देना भी है। तो इतने चमत्कारी गुण और उपयोगी होने के कारण हमें इन्हें अपनी गर्मी का साथी बनाकर लाभ जरूर लेना चाहिए।

शिक्षा

आरके सिन्हा

लेखक पूर्व सांसद हैं।

क्यों श्रेष्ठ कॉलेज खोलें गांवों में स्कूल

कभी विचार कीजिए कि किसी स्कूल या कॉलेज को किस आधार पर श्रेष्ठ कहा जाना चाहिए? बेशक, इसका एकमात्र पैमाना यही हो सकता है कि उस शिक्षण संस्थान ने अपने विद्यार्थियों को इस तरह के संस्कार दिए जिसके चलते उन्होंने आगे चलकर बेहतर नागरिक बनकर देश और समाज की सेवा की। इसका एक पैमाना यह भी हो सकता है कि क्या उसने (शिक्षण संस्थान) ने अपना विस्तार किया? विस्तार से मतलब है कि क्या उसने अपनी कोई अन्य शाखा भी खोली और वहां का शिक्षण भी श्रेष्ठ और स्तरीय रहा। बेशक, इस मोर्चे पर दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज का नाम लेना होगा। सेंट स्टीफंस कॉलेज को गांधी जी के परम सहयोगी दीनबंधु सी.एफ.एंड्रूज की संस्था दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी ने स्थापित किया था। एंड्रूज ब्रिटिश नागरिक होते हुए भी भारत की आजादी के समर्थक थे। उन्होंने सेंट स्टीफंस कॉलेज में पढ़ाया भी। अब उनके कॉलेज ने अपना विस्तार कर लिया है। इसने कोई अन्य कॉलेज नहीं खोला है।

दरअसल अब दिल्ली ब्रदरहुड़ सोसायटी ने दिल्ली और हरियाणा के सोनीपत की सीमा के राई नामक ग्रामीण क्षेत्र में सेंट स्टीफंस कैंम्ब्रिज स्कूल खोला है। यानी कि यह स्कूल शहरों और महानगरों की चमक-दमक से दूर ज्ञान की रोशनी को फैलाएगा। निश्चित रूप से प्रत्येक शिक्षण संस्था का यही लक्ष्य होना चाहिए। भारत के गांवों में जितने बेहतर स्कूल खुले, उतना ही बेहतर होगा। हमारे बड़े-बड़े शहरों में तो अब खूब स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय खुल रहे हैं, पर जरूरत है ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक स्कूल खोलने की है, जिनकी स्तरीय फैक्ल्टी हो और वहां बाकी तमाम सुविधाएं भी मौजूद हों। यह प्रयास पिछले लगभग 140 वर्षों में 700 से ज्यादा शिक्षण संस्थान देश के कोने-कोने में खोले और सेवा भाव से चलाया। सन् 1885 में महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित डीएवी (पूरा नाम-दयानंद ऐग्रो वेदिक स्कूल) और कॉलेज समूह इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि समाज में सेवा भावना से चलाया जाने वाला कार्य भी सफल हो सकता है।

अभी कुछ दिन पहले संघ लोक सेवा परीक्षा (यूपीएससी) की परीक्षा के नतीजे घोषित किए गए। सारा मीडिया सफल कैंडिडेट्स के इंटरव्यू करता रहा। बीते सालों की तरह से इस बार भी राजधानी के सेंट स्टीफंस कॉलेज से पढ़े हुए बहुत से विद्यार्थियों ने यूपीएससी परीक्षा को क्रैक किया। सेंट स्टीफंस कॉलेज के छात्र रहे अंशुल भट्ट ने मेरिट लिस्ट में 14 वां स्थान ग्रहण किया। विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा से लेकर भारतीय रिजर्व बैंक अध्यक्ष शक्तिकान्त दास सेंट स्टीफंस कॉलेज के पूर्व छात्र रहे हैं। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी सेंट स्टीफंस कॉलेज से ही पढ़ाई की है। इसने देश के न जाने कितने सितारे निकाले हैं। उनकी गिनती करना असंभव है।

सेंट स्टीफंस कॉलेज के शुरूआती दौर में पढ़ने के लिए मौजूदा हरियाणा राज्य से चौधरी छोटूराम भी आया करते थे। वे आगे चलकर किसानों के मसीहा कहलाए। अब भी हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ग्रामीण जनता चौधरी छोटूराम को अपना मसीहा मानती है। संयोग देखिए कि अब उनके प्रदेश में उनके शिक्षण संस्थान ने दस्तक दे दी। जाहिर है, इसका लाभ ग्रामीण क्षेत्र की जनता को भी मिलेगा।

अगर आपका कभी दिल्ली के चांदनी चौक में जाना हो तो आपको वहां पर किनारी बाजार को ढूंढने में कोई

कठिनाई नहीं होनी चाहिए। वहां से आप कटरा खुशहाल राय में चंद मिनटों में पहुंच सकते हैं। यहां पर पहुंचकर किसी से पूछिए कि सेंट स्टीफंस कॉलेज कहां था? आपको कोई ना कोई बता देगा कि उस सामान्य सी हवेली का रास्ता जहां से 1 फरवरी, 1881 को सेंट स्टीफंस कॉलेज की यात्रा शुरू हुई थी। यह तब कलकत्ता यूनिवर्सिटी का हिस्सा था। सेंट स्टीफंस कॉलेज की दिल्ली के चांदनी चौक में स्थित पहली इमारत को देखकर कोई सोच भी नहीं सकता कि यहां से शुरू हुआ सेंट स्टीफंस कॉलेज बुलंदियों को छूने लगेगा। जो सफर 140 साल से भी पहले शुरू हुआ था था, उसका अब विस्तार हो चुका है। सेंट स्टीफंस कैम्ब्रिज खुल चुका है। महत्वपूर्ण है कि दिल्ली में ब्रदरहुड ऑफ दि एसेंनडेंड क्राइस्ट की स्थापना सन 1877 में हुई थी। इसका संबंध कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से है। इसने आगे चलकर अपना नाम दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी रखा। इसने ही राजधानी में सेंट स्टीफंस अस्पताल की भी स्थापना की थी। देश के बंटवारे के बाद सरहद के उस पार से लुटे-पिटे आए लाखों हिन्दू और सिख शरणार्थियों का इस अस्पताल ने श्रेष्ठ इलाज किया था।

एक बात बहुत साफ है कि स्तरीय शिक्षा सर्वसुलभ होनी बहुत आवश्यक है। इसके लिए जरूरी है कि सालों, दशकों से स्थापित शिक्षण संस्थाएं अपना तेजी से विस्तार करें। वे देश के ग्रामीण क्षेत्रों का रुख भी करें। वहां पर स्तरीय और सस्ती शिक्षा उपलब्ध करवाएं। स्कूल या कॉलेज खोलने का आधार अपनी जेबें भरना नहीं होना चाहिए। जो शिक्षा के नाम पर मोटी कमाई कर रहे हैं, वे सच में मां सरस्वती का अपमान कर रहे हैं। मैं यहां पर महात्मा गांधी के परम शिष्य ब्रज कृष्ण चांदीवाला का उल्लेख करना चाहता हूं। चांदीवाला गांधी जी से पहली बार 1918 में मिले थे। तब गांधी जी दिल्ली आए ही थे। उसके बाद वे गांधी जी के जीवपर्यंत शिष्य बनकर साथ रहे। उन्होंने गांधी जी के पार्थिव शरीर का 31 जनवरी,1948 की रात को अंतिम स्नान भी करवाया था। ब्रज कृष्ण चांदीवाला ने अपनी मां और समाज सेविका श्रीमती जानकी देवी जी के नाम पर 1959 में राजधानी में जानकी देवी कॉलेज स्थापित किया था। इस क़ॉलेज ने अब तक लाखों बेटियों को साक्षर बनाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यहां इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स स्कूल की चर्चा करना समीचीन होगा। राजधानी का यह कन्या विद्यालय 1904 में शुरू हुआ था। यह उत्तर भारत के पहले कन्या विद्यालयों में से एक माना जाता है।

कमला नेहरू, प्रख्यात सरोद वादिका शरण रानी बाकलीवाल, कपिला वात्सायन वगैरह ने इसी में शिक्षा ग्रहण की थी। इस स्कूल के प्रबंधन ने ही राजधानी में इन्द्रप्रस्थ कॉलेज खोला जिसने हाल ही में अपना 100 साल का सफर पूरा किया है।

यह कैसे हो सकता है कि दिल्ली यूनिवर्सिटी के सबसे पुराने कॉलेजों में से एक रामजस कॉलेज के संस्थापक, शिक्षाविद और दानवीर राय केदारनाथ का उल्लेख रह जाए। उन्होंने अपने पिता लाला रामजस मल के नाम पर रामजस कॉलेज और अनेक स्कूल स्थापित किये। राय केदारनाथ दिल्ली के सेशन जज भी रहे। उन्होंने अपनी नौकरी को छोड़कर ज्ञान की रोशनी फैलाने में अपना जीवन लगा दिया। कहते हैं कि वे अपने स्कूलों की इमारतों के निर्माण के समय खुद सिर पर ईंटे ढोया करते थे। रामजस कॉलेज और स्कूलों में देशभर के बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं। यहां दिल्ली विश्व विद्यालय की तरफ से भी एक स्कूल चलाया जाता है। यह विश्व विद्यालय कैंपस में ही है। उसने कुछ समय पहले अपनी 75वी वर्षगांठ मनाई। कितना अच्छा हो कि दिल्ली विश्व विद्यालय की तरफ से किसी ग्रामीण इलाके में स्कूल चलाया जाये।

फ्लैक्स मामले में भाजपा नेताओं की सफाई

चुनाव खर्च में ना जुड़े, इसलिए नहीं लगाई थी फोटो

बैतूल। मुख्यमंत्री मोहन यादव के कार्यक्रम में लगाए गए स्वागत फ्लैक्स से भाजपा प्रत्याशी दुर्गादास उइके की फोटो गायब होने के मामले में भाजपा नेताओं की सफाई सामने आई है। किसी ने बोला कि यह मामला उनकी जानकारी में नहीं है, जानकारी जुटाई जाएगी, तो किसी ने बोला कि फोटो लगाने पर चुनाव खर्च में जुड़ जाता, इसलिए फोटो नहीं लगाई। भाजपा नेताओं का पक्ष भले ही कुछ हो, लेकिन फोटो नहीं लगाने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। इस मामले जब ने पड़ताल की तो यह सामने आया है कि भाजपा जिला कोषाध्यक्ष के कुछ उत्साही साथियों ने यह फ्लेक्स लगाए थे।

यह था पूरा मामला- यादव समाज के वोटरों को साधने के लिए यादव समाज बाहुल्य क्षेत्र मलाजपुर में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की जनसभा कल आयोजित की गई थी। इस कार्यक्रम में स्वागत के लिए लगभग 8 फ्लैक्स लगाए गए थे। इन फ्लेक्स में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर मुख्यमंत्री तक की फोटो लगाई गई थी। इसके साथ ही विधायक और भाजपा संगठन के पदाधिकारियों के अलावा स्थानीय भाजपा नेताओं की भी फोटो लगी थी। इन फ्लेक्स में एक तरफ भाजपा के जिला कोषाध्यक्ष और सर्व यादव समाज के जिलाध्यक्ष कांतिलाल यादव और घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा उइके की बड़ फोटो लगी थी। इन सभी फ्लैक्स में भाजपा प्रत्याशी दुर्गादास उइके की फोटो नहीं लगी थी।

हटाए गए फ्लैक्स- कार्यक्रम में लगे फ्लैक्स में भाजपा प्रत्याशी की फोटो नहीं लगी तो हड़कम्प

मच गया और आनन-फानन में चार फ्लेक्स हटा दिए गए। मंच के बाएं तरफ लगे फ्लेक्स के ऊपर दूसरा फ्लैक्स लगाया, जिसमें भाजपा प्रत्याशी की फोटो लगी हुई थी। इसके अलावा दाएं तरफ लगे तीन फ्लैक्स यथा स्थिति रहे।

जानकारी जुटाई जा रही है- मीडिया में जब भाजपा जिला महामंत्री कमलेश सिंह से फ्लैक्स में भाजपा प्रत्याशी की उपेक्षा को लेकर सवाल किया तो उनका कहना था कि भाजपा संगठन के द्वारा प्रचार सामग्री पूरे क्षेत्र में एकसी वितरित की जा रही है। अगर कार्यक्रम स्थल पर लगे फ्लेक्स में प्रत्याशी की फोटो नहीं थी, तो इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। इसकी जानकारी संगठन स्तर पर जुटाई जाएगी और कार्यवाही की जाएगी।

भूलवश लगा दिए फ्लैक्स- कार्यक्रम में लगाए गए फ्लेक्स के विषय में जब भाजपा के जिला कोषाध्यक्ष कांतिलाल यादव से चर्चा की गई तो उन्होंने कहा कि हमारे कुछ उत्साही साथियों ने फ्लैक्स लगा दिए थे। उन्होंने बताया कि सांसद की फोटो लगा देते तो वह चुनाव खर्च में जुड़ जाता। भूलवश उन्होंने यह फ्लैक्स लगाए थे। राजनीति में कोई ऊपर जाता है तो कई लोगों को तकलीफ रहती है। वह अलग-अलग बात करते हैं उन्होंने यह हाईलाइट किया है।

राजेश आहूजा ने प्रदेश भाजपा प्रवक्ता नेहा बग्गा का स्वागत किया

बैतूल। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश मीडिया प्रभारी सुश्री नेहा बग्गा लोकसभा चुनाव में मीडिया की मिली विशेष जिम्मेदारी के तहत बैतूल पहुंची। इस दौरान उन्होंने वरिष्ठ भाजपा नेता राजेश आहूजा के निवास पर सौजन्य भेंट दी। इस मौके पर राजेश आहूजा ने सुश्री नेहा बग्गा का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। सुश्री बग्गा ने इस दौरान राजेश आहूजा से लोकसभा चुनाव को लेकर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर सोहन सिंग, माधुरी साबले, गुल पोपली, मनीष मिसर, पूजा अमझरे आदि मौजूद थे।

लाइलाज बीमारी पूर्वकृत पापों का फल : साध्वी रेखा

अवतरण दिवस पर मुलताई आश्रम में आयोजित हुआ सत्संग और भंडारा

बैतूल। जिसमें उन्होंने वैशाख मास की महिमा बताते हुए कहा कि पद्म पुराण के अनुसार वैशाख मास में सूर्योदय से पूर्व स्नान करने वालों के घर में लक्ष्मी स्थाई रूप से वास करती है और उस व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। जब कोई लाइलाज बीमारी होती है तो समझो वो हमारे पूर्वकृत पापों का ही फल होता है उसे दूर करने हेतु दान और सत्कर्म करना चाहिए। उक्त उद्गार संत श्री आशारामजी बापू के अवतरण दिवस पर सोमवार श्री योग वेदांत सेवा समिति मुलताई द्वारा चैनपुर स्थित आश्रम में बापूजी की साधिका शिष्या साध्वी रेखा बहन के सत्संग के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि वैशाख मास में जल दान का भी विशेष महत्व है। सोमवती अमावस्या पर तुलसी की 108 परिक्रमा से दरिद्रता दूर होती है और अक्षय तृतीया पर किए सत्कर्म अक्षय हो जाते है। साध्वी रेखा बहन ने साधकों से पूज्य बापूजी के प्रति हो रही सुनियोजित साजिश और कुप्रचार को एकजुट होकर सुप्रचार से काटने का आह्वान किया। दोपहर हजारों साधकों के बीच साध्वी रेखा बहन ने 89 दीप प्रज्वलित कर हर्षोल्लास से अवतरण दिवस मनाया और बधाई गीत और भजन कीर्तन गाकर श्रद्धालुओं के हृदय में भक्ति भाव का संचार कर दिया। आयोजित सत्संग में और विशाल भंडारे में जिले भर से हजारों साधक शामिल हुए।

बैतूल बारात में आई लड़की के साथ छेड़खानी को लेकर हुआ विवाद

जमकर चले चाकू, पत्थर, डंडे और राड, 9 बाराती घायल

बैतूल। मामला बैतूलगंज थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम किलाखंडारा का है, जहां गांव में विवाह समारोह में प्रभात पट्टन से आई बारात मे आई किसी लड़की को ग्राम में किसी के द्वारा छेडखानी किए जाने पर विवाद हुआ और विवाद मारपीट में तब्दील हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि किलाखंडारा के अज्ञात युवकों ने बारात में आए युवकों के साथ जमकर मारपीट की। प्राप्त जानकारी के अनुसार विवाद लगभग 10 बजे प्रारंभ हुआ और सुबह 8 बजे तक चलता रहा। जिसमें 9 युवकों को गंभीर चोटें आई है, इसके बाद उन्होंने जिला चिकित्सालय लाया गया और सभी का उपचार कराया गया। घटना की जानकारी मिलते ही गंज थाना पुलिस ग्राम में पहुंची। पुलिस पहुंचने के बाद सभी वहां से भाग खड़े हुए। पुलिस ने काफी समय उन लोगों को खोज की, परंतु कोई नहीं मिला। पुलिस लगभग 1 घंटे रुक कर वापस आई। पुलिस के जाने के बाद पुनः विवाद हुआ और जमकर मारपीट हुई। मारपीट में घायल होने वाले युवक अविनाश पिता साहब राव सुरजे 18 हाथ में चोट, अमर पिता साहब राव सुरजे 18 वर्ष हाथ में चोट, प्रमोद पिता परसराम नायक 28 वर्ष हाथ में चोट, दुर्गेश पिता रामराव कासदे सर में चोट, दर्शन पिता विनोद बारस्कर सर पर चोट, धीरज पिता गोकुल सुरजा सर पर चोट, संजय पिता मारुति नागले 17 वर्ष, सिर में चोट, पवन पिता परसराम राठौर 28 वर्ष पैर में चोट, सभी निवासी प्रभातपट्टन एवं गोलू पिता नाथूलाल 40 निवासी किलाखंडारा हाथ में चोट आई है, पुलिस ने सभी घायलों का मेडिकल कराकर मामला पंजीबद्ध कर लिया।

96 प्रतिशत से अधिक अतिवरिष्ठ व दिव्यांग मतदाताओं ने किया घर पर ही मतदान : कलेक्टर सूर्यवंशी

द्वितीय चरण में शत-प्रतिशत मतदान की संभावना

बैतूल। जिले के 85 वर्ष से अधिक उम्र के अति वरिष्ठ मतदाता एवं 40 प्रतिशत से अधिक विकलांगता वाले दिव्यांग मतदाताओं के लिए सोमवार को घर पर ही मतदान की व्यवस्था की गई थी। होम वोटिंग के प्रथम चरण में इस वर्ग के 96 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि जिले की 5 विधानसभा क्षेत्रों के 1236 मतदाता इन संवर्गों में चिन्हित किए गए थे। इन 1236 मतदाताओं में से 1190 मतदाताओं ने अपने मत का उपयोग किया। इस प्रकार शेष 46 मतदाता द्वारा 1 मई को द्वितीय चरण में मतदान किए जाने से शत प्रतिशत मतदान की संभावना है।

श्री सूर्यवंशी ने बताया कि घर पर मतदान का सोमवार को प्रथम चरण था। मतदान का द्वितीय चरण 01 मई को होगा। द्वितीय चरण में वे मतदाता मतदान कर सकेंगे जिन्होंने किसी कारणवश, प्रथम चरण में मतदान नहीं कर पाए थे।

एक दूनी दो, दो दूनी चार, वोटर तुम बनो होशियार

रैली निकाल कर गीत के माध्यम से मतदाताओं को किया जागरूक

- **शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर मतदान के लिए कर रहे प्रेरित**

बैतूल। 7 मई 2024 को होने वाले लोकसभा चुनाव में शिक्षक और छात्र समूह मिलकर मतदान के लिए जागरूक कर रहे हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार एवं जिला स्वीप नोडल अधिकारी अक्षत जैन के मार्गदर्शन में स्वीप जिला यूथ आइकॉन अभिलाषा बाथरी द्वारा जिले में मतदान के महत्व को समझाने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी के तहत एनएससीबी बालिका छात्रावास सदर की शिक्षका प्रीति फाटे और छात्राओं ने मतदान जागरूकता बढ़ाने के लिए एक नवाचार किया। इस गतिविधि के दौरान, छात्राओं ने इटारसी रोड सदर से विभिन्न नारे लगाकर रैली निकाली, जिसमें उन्होंने एक दुनी दो, दो दुनी चार, वोटर तुम बनो होशियार गीत गाकर मतदाताओं को जागरूक करने का प्रयास किया। छात्राओं ने बताया कि ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय,वे इस गीत के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करेंगे और मतदान केंद्र तक पहुंचने के लिए प्रेरित करेंगे। इसी क्रम में,

विकासखंड घोड़ाडोंगरी माध्यमिक शाला के शिक्षक प्रध्युन सरसोदे ने गणित की 'यामिति आकृति के पोस्टर पर नारे लिखकर सकारात्मक पहल की। बीएलओ धनराज यादव ने भी अपने गांव में रैली का आयोजन किया, नारे लगाए गए और ग्रामीणों को मतदान की महत्वता के बारे में जागरूक किया गया। यूथ आइकॉन अभिलाषा बाथरी ने कहा मतदान एक महत्वपूर्ण नागरिक कर्तव्य है जो हमें लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों की ओर ले जाता है। हम सभी को अपने देश के भविष्य के निर्माण में भागीदार बनने का संदेश देना चाहिए। हम सभी मिलकर मतदान करें और अपने देश की ताकत और लोकतंत्र को मजबूत करने में योगदान दें। यह हमारा नागरिक दायित्व है, और हमें इसे पूरा करना चाहिए। उन्होंने कहा यह एक बहुत ही उत्साहजनक और सकारात्मक पहल है। छात्राओं की इस गतिविधि से मतदान की जागरूकता बढ़ाने में मदद मिलेगी। इस तरह के सामाजिक उत्सवों का बहुत महत्व है।

तेज रफ्तार बोलेरो ने स्कूटी को मारी टक्कर

स्कूटी चालक की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत

बैतूल। घटना बैतूल बाजार थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम बडोरा के आठनेर रोड की है जहां देर रात शादी समारोह से वापस लौट रहे चिचोली निवासी जगदीश पिता सुंदरलाल आर्य कुछ सामने से आ रही तेज रफ्तार बोलेरो ने टक्कर मार दी जिसके चलते स्कूटी चालक युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई युवक को लहूलुहान हालत में एंबुलेंस की सहायता से बैतूल जिला चिकित्सालय लाया गया जहां डॉक्टरों द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया गया फिलहाल मृतक युवक का शव बैतूल जिला चिकित्सालय के मर्करी में रखा गया है सोमवार शव का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप जाएगा फिलहाल जिला चिकित्सालय चौकी ने पूरे मामले पर मार्ग कम कर लिया है।

कुमुद शर्मा पंचतत्व में विलीन

बैतूल। स्वर्गीय रामबहादुर शर्मा की पत्नी एवं प्रमोद शर्मा, विनोद शर्मा एवं सुबोध शर्मा की माँ तथा शासकीय जेएच महाविद्यालय की सेवानिवृत प्रोफेसर श्रीमती ज्योति शर्मा, श्रीमती रत्न प्रभा शर्मा इंदौर एवं शासकीय हाईस्कूल हमलापुर की प्राचार्य श्रीमती निशी शर्मा की सास

श्रीमती कुमुद शर्मा (88 वर्ष) का सोमवार सुबह करीब साढ़े दस बजे निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ थी। शिक्षा विभाग में पदस्थ जिला योजना अधिकारी सुबोध शर्मा के कालापाठा स्थित निवास से अंतिम यात्रा शाम चार बजे कोठीबाजार मोक्षधाम के लिए निकाली गई। चिता को मुखाग्नि बड़े पुत्र प्रमोद शर्मा ने दी। उनके अंतिम संस्कार में सांसद दुर्गादास उईके के अलावा शिक्षा विभाग के अधिकारीगण, कर्मचारीगण, व्यापारीगण, पत्रकारगण, वकील सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक शामिल हुए। मोक्षधाम परिसर में दो मिनट का मौन रखकर स्वर्गीय कुमुद शर्मा को श्रद्धांजलि दी गई एवं शोक संतप्त परिवार को गहन दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से कामना की गई।

हर बूथ पर सौ प्रतिशत मतदान हमारा लक्ष्य : जामवाल

बैतूल एवं आमला विधानसभा कोर ग्रुप की बैठक संपन्न

बैतूल। भाजपा के मप्र, छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल ने कहा कि प्रत्येक बूथ पर सौ प्रतिशत मतदान हमारा लक्ष्य होना चाहिए। श्री जामवाल गंज स्थित एक निजी होटल में आमला एवं बैतूल विधानसभा की प्रबंध समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि प्रत्येक बूथ की बारिकी को समझना और वहां शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करना हम सबकी जिम्मेदारी है। बैठक को संबोधित करते हुए श्री जामवाल ने कहा कि विकसित भारत की संकल्पना को पूरा करने के लिए हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अठारह अठारह घंटे काम कर रहे है। लोकसभा चुनाव संपन्न होने तक हमे भी प्रतिदिन आठ घंटे संगठन का काम करना है। एक एक बूथ को मजबूत कर हर बूथ पर 70 मतों की बढ़ोतरी करनी है। क्षेत्रीय संगठन महामंत्री ने जिला पदाधिकारी, विधानसभा संयोजक, मंडल अध्यक्ष और निर्वाचित जनप्रतिनिधियों से उनके प्रवास की जानकारी ली एवं चुनाव की दृष्टि से अभी तक संपन्न कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए सभी के लिए लक्ष्य तय किया। इस अवसर पर प्रदेश लोकसभा चुनाव संयोजक हेमंत खंडेलवाल, नर्मदापुरम संभाग के प्रभारी एवं भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष पंकज जोशी, लोकसभा प्रभारी भरतसिंह राजपूत, बैतूल लोकसभा चुनाव संयोजक अलकेश आर्य, जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, लोकसभा विस्तारक सोहन सिंह, विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे, जिला महामंत्री कमलेश सिंह, विधानसभा संयोजक किशोर बरदे, सहित सभी मंडलों के अध्यक्ष, जनपद अध्यक्ष, नगर पालिका, परिषद अध्यक्ष, जिला पंचायत सदस्य, मोर्चा जिलाध्यक्ष एवं विधानसभा में निवासरत जिला पदाधिकारी मौजूद रहे।

चिकित्सक अवॉर्ड 2024 से सम्मानित हुए फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. संदीप परिहार

बैतूल। चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए रविवार को आयोजित कार्यक्रम में बैतूल के फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर संदीप परिहार को चिकित्सक अवार्ड 2024 से सम्मानित किया गया। चिकित्सक अवार्ड 2024 का आयोजन होटल रीगल ग्रैंड अवधपुरी भोपाल किया गया। जिसमें बैतूल जिले से यूनाईटेड हेल्थ वर्कर्स वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. संदीप परिहार, जिन्होंने फिजियोथेरेपी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है। समाजसेवी डॉ. संदीप परिहार के द्वारा कई निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया है साथ ही सीपीआर ट्रेनिंग भी करवाई गई है, जिससे

कई लोगों की जान बचाई जा सकती है। उनके द्वारा प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण, निःशुल्क फिजियोथेरेपी शिविर, छोटे विकलांग दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क फिजियोथेरेपी भी दी जाती है। उनके इन्हीं उत्कृष्ट कार्य करने के उपलक्ष्य में इन्हें सम्मानित किया गया। जिले में यूनाईटेड हेल्थ वर्कर्स वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया मे कार्य कर रहे ऑर्गेनाइजेशन के संभाग अध्यक्ष डॉ योगेश पवार,जिला सचिव डॉ भरत यादव, जिला उपाध्यक्ष डॉ सुजाता सिंह, कैंप प्रभारी डॉ भारती हजारे को भी भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।

होशंगाबाद की हलचल

संजीव डेराय

सोशल मीडिया पर उठी जनहित की बात..

पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी ने जनता के सामने बेबाकी से सरकार का सच सामने रखा था, केंद्र उन्हें एक रुपया भेजता है उसके पास 15 पैसे पहुंचते है। विपक्षी भाजपा ने तुरंत उस बयान के जरिए प्रहार कर सरकार को भ्रष्टाचारी साबित कर सरकार चलाना मुश्किल कर दिया था। यह विपक्षी ताकत थी अब सरकार में बैठी भाजपा ने विपक्ष रहने ही नहीं दिया, फिर भला सरकार के विरुद्ध मुंह कौन खोल पाएगा..? लेकिन आम जनता में भी आज लोग हैं जो बारीकी से सरकार के कामकाज को देखते हैं, बात उठाते लेकिन उनकी बात का असर नक्कारखाने में तूती ही साबित होती। किसान संघ से जुड़े शिव मोहन सिंह का यह सवाल प्रासंगिक है भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी के पुत्र पूर्व मंत्री एवं वर्तमान में कांग्रेस नेता दीपक जोशी का वह बयान जिसमें उन्होंने स्वीकार किया कि विधायक निधि से बनने वाले बस स्टॉप के कमीशन में उन्हें ?100000 कमीशन मिलता था। यह अकेले विधायक निधि की कमीशन खोरी वाली बात नहीं.. किसी भी योजना में तबीयत से कमीशन खोरी होती है। ठेकेदार चाहे मैं यह करूं चाहे मैं वह करूं, उसकी पीड़ा आम जनता भोगती है, नगर का सीवरेज सिस्टम प्रोग्राम उसका उदाहरण बताया, कष्ट जनता भोग रही मलहम के नाम पर थोड़े-थोड़े दिन में ठेकेदार को नोटिस जारी कर दिया जाता बस.. पूरे शहर को खोदकर आम जनता को कष्ट देने वाले ठेकेदार पर आखिर पब्लिक न्यूसेंस क्रिएट करने का मामला प्रशासन दर्ज करते हुए उसको कानून के कटघरे में खड़ा नहीं करता ..? यही बात वो स्थानीय विधायक डॉ सीतासरन शर्मा से जानना चाहते हैं। विषय संज्ञान लेते हुए आम जनता की तकलीफ़ वो दूर क्यों नहीं कर पा रहे।

जिले में विपक्ष नहीं है उसका असर ऐसा भी...

विपक्ष का नहीं होना जनहित में काफी नुकसान देही होता है बात सभी जानते हैं लेकिन मानते नहीं, नगर ही नहीं पूरा जिला भाजपाई गढ़ है मजाल विपक्ष इस जिले में हावी हो जाएं और सत्ताधारी जनहित पसंद कर पाएं.. नगर के भीतरी हिस्से हो या नगर से बाहर निकलने का मार्ग आवाम को चैन नहीं, विपक्ष विहीन जिले में प्रशासन भी गूंगा बेहरा ऐसे में डबल इंजन या ट्रिपल इंजन की सरकार का क्या मतलब..? मतदान हो चुका, अधिसूचना लागू है और प्रशासन पंगु है यह दर्द नेशनल हाईवे पर 28 अप्रैल को देखा गया लगभग तीन घंटे का जाम लेकिन बोलने और व्यवस्था बनाने वाला कोई नहीं, राष्ट्रीय किसान कांग्रेस नेता कुलदीप पटेल अपना दर्द साझा करते हैं नर्मदा ब्रिज के समीप बने गार्डन और उनमें होने वाली शादियों को लेकर कोई कहने सुनने वाला नहीं.. आखिर हाईवे के निकट गार्डन की अनुमति उनके पहुंच मार्ग का प्रावधान, बारात का हाई-वे पर प्रदर्शन क्या मजाक चल रहा, कानून व्यवस्था है या नहीं.. जाम में फंसे बेचारे केवल कुछ बोल बतिया कर ही दर्द साझा कर सकते.. विपक्ष इसलिए बहुत ही जरूरी हैं वह बिलकुल नहीं.. फिर नुकसान की संभावना वाले सत्ताधारी किसी भी गुट में बढ़िया है...

उपनगर रसूलिया की उपेक्षा...

नगर का एक बड़ा उपनगरीय क्षेत्र रसूलिया एक बार फिर सुर्खियों में आ गया। किसी समय यह क्षेत्र रेलवे फाटक बंद होने के कारण और सर्पिला ओवरब्रिज निर्माण को लेकर सालों सुर्खियों में बने रहा। इन दिनों इस क्षेत्र में एक मात्र पेट्रोल पंप बंद होने के कारण सुर्खियों में है। दो महीने से नगर में स्थित पुराने बस-स्टैंड के पास और रसूलिया उपनगर स्थित फौजदार पेट्रोल पंप बंद होने का कारण स्पष्ट रूप में सामने नहीं आ पा रहा, पारिवारिक विवाद स्वरूप बंद हो सकते कहे जा रहे फौजदार पेट्रोल पंप को लेकर फिलहाल रसूलिया उपनगर रहवासियों को कष्ट का सामना करना पड़ रहा है। कहा जा रहा है कि इतने समय तक अत्यंत आवश्यक सेवाओं में शामिल पेट्रोल पंपों को बंद रखा जाना नियम विरुद्ध है। वैसे भी इन दिनों लोकतंत्र के महापर्व को लेकर आचार संहिता लागू है। लेकिन रसूखदार परिवार से संबंधित इन पेट्रोल पंप को लेकर प्रशासनिक जिम्मेदार भी कहने से परहेज़ करते हैं।

और अंत में अब चलते-चलते..

अधिकारी का बड़बोलापन...

कृषि विभाग के एक अधिकारी का बड़बोलापन आखिरकार किसकी शह पर है, खोज का विषय बन गया, पुराने साहब बहादुर की नाक के बाल रहे साहब अपनी पुरानी करतूतों को छोड़ नहीं पा रहे, वरिष्ठों की सेवा कर किस तरह आरोपों से बच पाए अधिकारी बेफ्रिक हैं वो गलत नहीं, पुरानी हरकत आरंभ कर चुके, विभाग में कहा जाता है महिला कलेक्टर होने के बाद यदि महिलाओं का सम्मान मुख्यालय पर नहीं हो पा रहा शर्म की बात है। क्योंकि विभागीय महिला कर्मचारी के मामले में बदनाम अधिकारी ने कार्यालय में पहुंचने वाली महिलाओं पर भी नजर गढ़ाना शुरू कर दी...

प्रत्येक बूथ पर 370 की बढ़त ही हमारा लक्ष्य है : हितानंद शर्मा

भाजपा की असली ताकत बूथ स्तर का कार्यकर्ता ही होता है

विधानसभा के अपेक्षित पदाधिकारियों की बैठक मनावर में संपन्न

धार। रविवार को प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा मनावर विधानसभा के अपेक्षित पदाधिकारियों के बीच उपस्थित हुए। इस बैठक में संगठन के कार्य करने की शैली पर अपने विस्तार से कार्यकर्ताओं से चर्चा की हितानन्द जी ने कहा कि हमें प्रत्येक बूथ पर 370 मतों की बढ़त प्राप्त करना है। जिसके लिए हमें प्रत्येक बूथ पर पार्टी की योजना बद्ध तरीके से कार्य करना होगा। भाजपा की असली ताकत बूथ स्तर का कार्यकर्ता होता है। वहीं बैठक में भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर भी सम्मिलित हुई। जिन्होंने सभी से मोदी जी की राम-राम कही। सांसद प्रत्याशी ने सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद कहा और इस तपती धूप और गर्मी में कार्य करने वाले सभी पार्टी सदस्यों एवं महिलाओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की शुरुआत भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी ने स्वागत भाषण से की। कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं को जिला प्रभारी श्याम बंसल एवं धार जिला संयोजक प्रभु राठौर ने भी संबोधित किया।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि अवसर पर मंचासीन अतिथि के रूप में भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल लोकसभा विस्तारक ओमप्रकाश, विधानसभा प्रभारी अशोक जैन आदि लोग रहे। इसके साथ ही बैठक में जिला युवा मोर्चा अध्यक्ष जय सूर्य, मनावर विधानसभा की जिला कार्यकारिणी एवं सभी मंडल अध्यक्ष मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन जिला उपाध्यक्ष सौरभ शर्मा द्वारा किया गया। एवं आधार जिला पंचायत सदस्य शिवराम कन्नौज में माना।

पूर्व विधायक राठौर के निधन पर भाजपा नेताओं ने शोक संवेदना व्यक्त की भाजपा का ध्वज ओढ़ाया

धार। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जसवंत सिंह राठौर का 83 वर्ष की आयु में सोमवार को निधन हो गया। श्री राठौर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संघचालक और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता धार विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 2003 में विधायक रहे। जसवंत सिंह राठौर के निधन

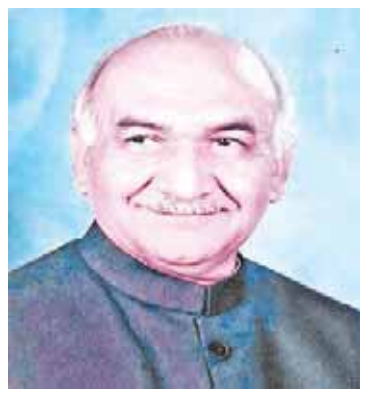

पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, सांसद छतर सिंह दरबार, सांसद प्रत्याशी सावित्री ठाकुर, धार विधायक नीना वर्मा ने अपनी शोक संवेदना व्यक्त की साथ ही पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर, दिलीप पटोदिया, अशोक जैन, भाजपा नेता उमेश गुप्ता, प्रकाश धाकड़, श्याम नायक, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, दीपक सिंह रघुवंशी, मनीष प्रधान राकेश दुर्गेश्वरी, राजेश जोशी, कालीचरण सोनवानिया, मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर, मनोज धाकड़, जीवन पटेल, नितेश अग्रवाल सहित अनेक भाजपा नेता ने उनके निवास पहुंचकर भाजपा का ध्वज ओढ़ाकर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

कलेक्टर, एसपी ने ग्यारसपुर के क्रिटिकल मतदान केन्द्रों व बॉर्डर चेक पोस्ट का निरीक्षण किया

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री बुद्धेश कुमार वैद्य ने आज विदिशा जिले के ग्यारसपुर तहसील अंतर्गत आने वाले मनौरा और हैदरगढ़ क्षेत्र में पहुंचकर क्रिटिकल मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने मतदान केन्द्रों पर किए गए प्रबंधों के संबंध में संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए हैं। जिन मतदान केन्द्रों में व्यवस्थाओं को लेकर खामियां पाई गई उन्हें दुरुस्त करने के निर्देश भी कलेक्टर श्री वैद्य के द्वारा दिए गए हैं। साथ मौजूद पुलिस अधीक्षक श्री दीपक कुमार शुक्ला ने भी सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से पुलिस के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। कलेक्टर श्री वैद्य एवं पुलिस अधीक्षक श्री शुक्ला ने मतदान केन्द्रों के साथ-साथ क्षेत्र के बॉर्डर चेक पोस्ट का भी निरीक्षण किया है। उन्होंने यहां तैनात एसएसटी दल के सदस्यों से संवाद कर निगरानी व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की है। इस दौरान उन्होंने मतदाताओं से यह अपील भी की है कि लोक सभा निर्वाचन 2024 में वह अपने अमूल्य मत का प्रयोग अवश्य करें।कलेक्टर श्री वैद्य ने ग्यारसपुर तहसील के हैदरगढ़ में एकीकृत माध्यमिक शाला पहुंचकर स्कूली विद्यार्थियों से पढ़ाई के संबंध में चर्चा की। इस दौरान कलेक्टर श्री वैद्य ने कहा कि विद्यार्थियों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा मिले का विशेष ध्यान रखा जाए।

कलेक्टर श्री सिंह ने खिरकिया मंडी और अस्पताल का किया निरीक्षण

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री आदित्य सिंह ने रविवार को खिरकिया के अस्पताल और कृषि उपज मंडी का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अस्पताल एवं मंडी प्रांगण का भ्रमण कर वहां की व्यवस्थाएं देखी और उपस्थित अधिकारियों की बैठक लेकर व्यवस्थाओं में आवश्यक सुधार के निर्देश विकासखंड चिकित्सा अधिकारी एवं मंडी सचिव को दिए। इस दौरान एसडीएम खिरकिया श्री संजीव नागू भी मौजूद थे। मंडी निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री सिंह ने मंडी शुल्क की वसूली से मंडी को प्राप्त होने वाली आय एवं मंडी में किसानों के लिए उपलब्ध सुविधाओं के सम्बन्ध में जानकारी ली।

इस दौरान मंडी खिरकिया के लेखापाल श्री विमलेश उइके, लिपिक श्री संदीप कौशल, श्री गुरु बख्श भाटिया तथा राम शंकर बांके अनुपस्थित पाए गए। कलेक्टर श्री सिंह ने अनुपस्थित चारों कर्मचारियों के विरुद्ध कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही शुरू करने के निर्देश एसडीएम श्री नागू को दिए। उन्होंने खिरकिया के एसडीएम और तहसीलदार को निर्देश दिए कि वे समय-समय पर कृषि उपज मंडी की

व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते रहें। कलेक्टर श्री सिंह ने मंडी सचिव श्री अशोक धुर्वे के विरुद्ध कारण बताओं नोटिस जारी करने के लिए भी कहा क्योंकि वे कलेक्टर द्वारा चाही गई जानकारी उपलब्ध नहीं करा सके।

खिरकिया अस्पताल का भी किया निरीक्षण

कलेक्टर श्री सिंह ने खिरकिया के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं पोषण पुनर्वास केंद्र का भी निरीक्षण किया। उन्होंने पोषण पुनर्वास केंद्र में भर्ती बच्चों की माताओं से वहां उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली।

उन्होंने विकासखंड चिकित्सा अधिकारी खिरकिया को निर्देश दिए कि रोगी कल्याण समिति के माध्यम से खिरकिया अस्पताल में मरीजों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराएँ। कलेक्टर श्री सिंह ने अस्पताल में रिक्त पदों के संबंध में भी जानकारी ली।

चिन्हांकित 85 वर्ष से अधिक आयु के और दिव्यांग मतदाताओं से घर पर ही कराया जा रहा है मतदान

रायसेन (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा आम निर्वाचन-2024 में 85 वर्ष से अधिक आयु के वयोवृद्ध मतदाताओं तथा 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता वाले मतदाताओं को घर पर ही मतदान की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अरविंद दुबे ने बताया कि विदिशा संसदीय क्षेत्र में शामिल जिले के विधानसभा क्षेत्र सांची, सिलवानी और भोजपुर में 85 वर्ष से अधिक आयु के 559 मतदाता तथा 189 दिव्यांग मतदाता घर पर ही मतदान कराने हेतु चिन्हांकित हुए हैं। रविवार को इन तीनों विधानसभाओं में 40 से अधिक दलों द्वारा चिन्हांकित मतदाताओं के घर जाकर निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन अनुसार पूरी गोपनीयता के साथ मतदान प्रक्रिया सम्पन्न कराई गई। प्रत्येक दल के साथ पुलिस बल और वीडियोग्राफर मौजूद रहे। आगामी दिवस में शेष चिन्हांकित मतदाताओं के घर जाकर मतदान प्रक्रिया सम्पन्न कराई जाएगी। रायसेन के वार्ड नम्बर-17 हाउसिंग बोर्ड निवासी 95 वर्षीय वयोवृद्ध मतदाता श्री एनके श्रीवास्तव, यशवंत नगर निवासी 86 वर्षीय श्रीमती चन्द्रकांता शर्मा सहित अन्य वयोवृद्ध मततदाताओं के घर पर पहुंचकर पूरी गोपनीयता और सुरक्षा के साथ मतदान प्रक्रिया सम्पन्न कराई गई।

सेहत

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

लेखक स्तंभकार हैं।

मोबाइल की आभासी दुनिया में खोता बालमन

सोशल मीडिया पर आये दिन इस तरह की तस्वीर देखने को मिल जाएगी जिसमें ड्राइंग रुम में तो परिवार के लगभग सभी सदस्य बैठे हैं पर उनके बीच किसी तरह के संवाद की बात करना ही बेमानी होगा। सभी अपने-अपने स्थान पर अपने मोबाईल फोन में खोये मिलेंगे। खोये होने का मतलब साफ है कि कोई गेमिंग कर रहा होगा तो कोई इंस्टाग्राम, फेसबुक, वाट्सएप या इसी तरह के किसी दूसरे एप पर व्यस्त होगा। सवाल साफ है कि जो हम देखेंगे उसमें हमें पसंद भी वोही आएगा जो अधिक ग्लेमरस होगा और यही कारण है कि गेमिंग, चेटिंग या फिर रील्स बनाने देखने में बच्चों से बड़े तक व्यस्त मिलेंगे। इसके साथ ही गेमिंग जहां बच्चों बड़ों को लालच दिखाकर एक तरह से जुआरी बना रही हैं वहीं कुछ गेम तो इस कदर हानिकारक रहे हैं कि उन्हें फॉलों करते करते बच्चों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा है। सोशियल मीडिया, ओटीटी व गेमिंग के साथ ही गूगल बाबा सहित खोजी चैनलों, डिजिटल प्लेटफार्म खोजी सामग्री तो कोई समाचार देखते-देखते ही कितने तरह के विज्ञापन सामने आ जाते हैं उनमें कई बार तो लगभग प्रोन जैसी सामग्री होने के बावजूद मजे से परोसी जाती रहती है और उसे बेन करने या सेंसर करने का कोई सिस्टम नहीं होने से उसका दुष्प्रभाव साफ देखा जाता है। भले ही सरकार द्वारा इस तरह के चैनलों, प्लेटफार्म, एप आदि पर रोक लगाने के लाख दावें किये जाते हो पर साफतौर से इस तरह की सामग्री आम है। इसके साथ ही इन प्लेटफार्मों पर परोसी जाने वाली सामग्री बच्चों तक नहीं पहुंचे या बालमन पर को प्रदूषित नही करें, इसकी कोई व्यवस्था नहीं होती है। जब इन प्लेटफार्मों पर हिंसा, यौन सामग्री, गेमिंग, संवेदनहीनता, तनाव, आत्महत्या या बदले की भावना प्रेरित करने वाली सामग्री परोसी जाएगी तो उसका प्रभाव से नकारा नहीं जा सकता। दरअसल यह विश्वव्यापी समस्या हो गई है और इसका समाधान समय रहते नहीं खोजा गया तो इसके जो दुष्परिणाम आएंगे व आने लगे हैं वे समाज के लिए भयावह होंगे, इस खतरे को समझना होगा।

तस्वीर का एक पक्ष यह भी है कि एक दूसरे से तत्काल संवाद कायम करने का माध्यम स्मार्टफोन, सोशियल मीडिया और इंटरनेट पर परोसी जाने वाली सामग्री का सर्वाधिक दुष्प्रभाव बालक मन पर पड़ रहा है। तकनीक का इस तरह का दुष्प्रभाव संभवतः इतिहास में भी पहले कभी नहीं रहा है। दरअसल आज हम हर समस्या का समाधान स्मार्टफोन और इंटरनेट को मानने लगे हैं। बच्चा रो रहा है या किसी बात के लिए जिद कर रहा है या चिड़चिड़ा हो रहा है तो माताएं या परिवार के कोई भी सदस्य बच्चें को चुप कराने या मनबहलाव और खास यह कि बच्चे को व्यस्त रखने के लिए मोबाइल संभला देते हैं। जबकि मोबाइल के दुष्प्रभाव हमारे सामने आने लगे हैं। अमेरिका में पिछले दिनों हुए एक सर्वे में सामने आया कि मोबाइल फोन, टेबलेट, वीडियो गेम या अन्य इस तरह के साधन के उपयोग से बच्चे गुस्सेल होते जा रहे हैं। बच्चों द्वारा स्कूल में गोलीबारी सहित एक दूसरे से मारामारी-हाथापाई व इस तरह की घटनाएं आम होती जा रही है। मारधाड़, हमेशा गुस्से में रहने, तनाव में रहने और जिद्दी होना आज आम होता जा रहा है। दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में हुए एक अध्ययन में भी साफ हो गया है कि शहरी बच्चें, गेमिंग, सोशियल मीडिया और ओटीटी प्लेटफार्म के आदी होते जा रहे हैं। इसका परिणाम यह होता जा रहा है कि बालक मन संवेदनहीन होता जा रहा है। हमेशा तनाव, डिप्रेशन, आक्रामकता, गुस्सेल, बदले की भावना आदि आम है। ऐसे में मनोविज्ञानियों के सामने नई चुनौती आ जाती है। यह असर कमोबेस लड़कों और लडकियों दोनों में ही समान रुप से देखा जा रहा है। यह कोई हमारे देश की समस्या हो, ऐसा भी नहीं हैं अपितु दुनिया के लगभग सभी देशों में यही हो रहा है। अमेरिका में किये गये एक अध्ययन में भी यही उभर कर आया है।

कोई दो राय नहीं कि विकास समाज की आवश्यकता है। स्मार्टफोन व इंटरनेट की दुनिया का अपना महत्व है। पर इनके दुष्प्रभाव भी सामने आने लगे हैं। प्लेटफार्मों पर चाइल्ड लोक की बात भी की जाती है पर चाइल्ड लोक कितना कारगर है यह हम सब अच्छी तरह से जान और समझ सकते हैं। मजे की बात तो यह है कि मोबाइल फोन, टेब, कम्प्यूटर, सोशियल मीडिया प्लेटफार्म आदि के फीचर्स व उपयोग का तरीका बड़ों से ज्यादा बच्चों को आता है। यहां तक कि प्ले ग्रुप के बच्चें को भी यह जानकारियां होने लगी है। ऐसे में इन पर परोसी जाने वाली सामग्री को सेंसर करने या इससे बच्चों और बालपन को दूर रखने की बात बेमानी होती जा रही है। समाज विज्ञानियों, मनोविश्लेषकों, चिकित्सकों यहां तक शिक्षाविदों के सामने यह गंभीर चिंतनीय चुनौती सामने आ रही है। आज बच्चे के सामने दो विकल्प एक मोबाइल फोन या सोशियल मीडिया पर सफरिंग और दूसरा परिवार के साथ गप्पे लड़ाना या आउटडोर गेम्स जैसा विकल्प होगा तो बच्चे की पहली पसंद मोबाइल फोन व सोशियल मीडिया पर सफरिंग ही होती जा रही है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है और दूसरा यह कि गरीब हो या अमीर सभी घर परिवारों के हालात लगभग यही है। दरअसल आज समय के बदलाव को इस तरह से समझा जा सकता है कि तीन से चार दशक पहले मोहल्ले में एक फोन होता था, ट्रंक काल में तो घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी वहीं फिर एसटीडी का युग आया और एसटीड़ी बूथों का अंबार लग गया उसके बाद पेजर युग को अलग कर भी दिया जाये तो मोबाइल युग ने घर-घर ही नहीं अपितु परिवार के लगभग सभी सदस्यों तक पहुंच बना ली है। ऐसे में इसके लाभ के साथ ही साइड इफेक्ट जो हमारे सामने आ रहे हैं उनका समाधान खोजना भी सबका दायित्व हो जाता है। बच्चें को चुप कराने से लेकर उसे व्यस्त रखने तक के लिए मोबाइल की घुट्टी पिलाई जाने लगी है और लोरी की जगह मोबाइल ने ले ली है तो फिर हमें बालमन पर इसके पड़ रहे दुष्प्रभाव से दो चार होने के लिए तैयार रहना होगा। देखा जाए तो पूरा सामाजिक ताना बाना ही बदल गया है। एकल परिवार, आने वाले समय में चाचा-चाची, मौसा मौसी या इसी तरह के रिश्तों की तलाश आदि सामने आने लगी है। शादी विवाह आदि पारिवारिक फंक्शन तक अब औपचारिक होते जा रहे हैं। बारात के समय पहुंचना, खाना खाना, लिफाफा थमाना तक रिश्ते सीमित हो गए हैं। ऐसे में समाज के सामने गंभीर समस्याएं आती जा रही है। ऐसे में मोबाइल या सोशियल मीडिया प्लेटफार्म आने वाली पीढ़ी को कहां ले जाएंगे यह भयावह तस्वीर कल्पना में नहीं अपितु हमारे सामने आती जा रही है। समय रहते विकास और विनाश के बीच कोई रास्ता तलाशना ही होगा।

राइट क्लिक

घटता मतदान : वोटर को रिझाने की जगह अब डराने का खेल

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

लोकसभा चुनाव के लगातार दूसरे चरण में भी मतदान प्रतिशत घटने से राजनीतिक दलों का आत्मविश्वास डगमगाने लगा है। पार्टियों को अब ऐसे 'क्लिक' करने वाले मुद्दे की तलाश है, जो वोटर को पोलिंग बूथ तक खींच कर ला सके। कम होते वोटिंग के साथ-साथ मुद्दों की शिफ्टिंग भी साफ तौर पर परिलक्षित होने लगी है। विकास और कुछ बड़ा करने के दावे अब हाशिए पर हैं। हकीकत में राजनेता अब मतदाता को रिझाने की जगह उसे डराने के खतरनाक खेल पर उतर आए हैं। कहीं मतदाता को आरक्षण खत्म करने और संविधान बदल डालने के नाम पर डराया जा रहा है तो कहीं महिला मतदाता से सम्पत्ति के समान वितरण के नाम पर महिला मतदाताओं से मंगल सूत्र तक छीन लेने और हिंदुओं की आय को मुसलमानों में बांट देने की बात कही जा रही है। इसकी व्यवहारिकता और सच्चाई पर कोई नहीं जा रहा है। चुनाव के कुरूक्षेत्र में भिड़ी दोनों राजनीतिक गठबंधनों की सेनाएं अब अपना-अपना वोट बैंक किसी भी कीमत पर बचाने में लगी हैं। लेकिन मतदाता राजनेताओं और राजनीतिक दलों की इस ड्रामेबाजी से मन ही मन खिन्न नजर आता है, शायद यही कारण है कि प्रलोभनों की बारिश और भयादोहन की पराकाष्ठा के बीच वह घर बैठना ही ज्यादा बेहतर समझ रहा है। भाव यह है कि किसी को भी वोट देने से फायदा क्या? हमाम में सभी निर्लज्ज और झूठे हैं।

यूं हर चुनाव में मतदान प्रतिशत की घट-बढ़ नई बात नहीं है और वोटों की यह कमीबेशी कभी सत्ता की वापसी तो कभी बेदखली के रूप में सामने आती है। वोट प्रतिशत के घटने बढ़ने का हार जीत से कोई सीधा रिश्ता नहीं है। यहां ऊंट किसी भी करवट बैठ सकता है। हालांकि चुनाव आयोग भी लोकतंत्र के इस महापर्व में मतदाता की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी को लेकर कई तरह से कोशिश करता है ताकि चुनाव नतीजों की साख अधिकाधिक बढ़े। राजनीतिक दल भी अपने पक्ष में वोट डलवाने के लिए पूरी कोशिश करते हैं, क्योंकि वोटों की संख्या ही सियासी रण में विजेता का फैसला करती है। लेकिन इस बार वोटर ही बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं दिख रहा है, इसके पीछे जो कारण गिनाए जा रहे हैं, उन्हें राजनीतिक मनोविज्ञानी, समाजशास्त्री और चुनावी रणनीतिकार भी समझने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ तर्क सामने भी आए हैं जिनमे गर्मी ज्यादा होने, एक वर्ग द्वारा मतदान दिवस की छुट्टी को पिकनिक डे के रूप में मनाने, भाजपा शासित ज्यादातर राज्यों में चुनावी माहौल एकतरफा होने का नरेटिव बनने, नई सरकार बनाने या बदलने के प्रति मतदाता के अप्रतिबद्ध होने, भाजपा नेताओं द्वारा चुनाव के पहले ही 4 सौ पार का नारा देकर चुनाव नतीजों की प्री सेटिंग करने से भाजपा के वोटर द्वारा चैन की नींद सोने, विपक्ष के एकजुट होने के बाद भी नेतृत्वविहीन होने तथा सत्ता परिवर्तन के लिए ऐसा कोई आंतरिक बल या प्रेरणा का अभाव जो मतदाता को पोलिंग बूथ तक जाने के लिए विवश करे आदि शामिल है।

दरअसल इस लोकसभा चुनाव के पहले राजनेताओं ने जिस तरह गर्वोक्तियां की थीं, उससे लग रहा था कि इस बार मतदान के दौरान कोई सुनामी आने वाली है, जो या तो मोदी सरकार के पक्ष में होगी या फिर उसके विरोध में। लेकिन मतदान के जो आंकड़े आ रहे हैं, उससे सुनामी तो क्या बरसाती नदी की मौसमी बाढ़ का भी अहसास नहीं हो रहा। हालत यह है कि 2019 के लोकसभा चुनाव की तुलना में पहले चरण में 102 सीटों पर हुए मतदान में औसतन 4.4 फीसदी की गिरावट आई तो दूसरे चरण में यह कमी और बढ़कर 7 फीसदी तक जा पहुंची। बावजूद इसके कि मप्र में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्य के मंत्रियों को साफ चेतावनी दे दी थी कि वोटिंग घटा तो उनकी कुर्सी भी जाएगी। इसका भी वोटरों पर कोई असर नहीं हुआ, अब मप्र में किस किस मंत्री की कुर्सी जाएगी, लोग इस पर चर्चा में ज्यादा रस ले रहे हैं बजाए इसके कि वोटिंग कैसे बढ़े। हालांकि मतदान के पांच चरण अभी बाकी हैं, लेकिन अगर वोटिंग ट्रेंड नहीं बदला तो सियासी दलों के चुनावी गणित गड़बड़ा सकते हैं।

मतदाता जो भी सोच रहा हो, राजनीतिक दलों ने इस उदासीनता को तोड़ने के लिए वोटर को रिझाने, मनाने की बजाए डराने के नुस्खे पर काम शुरू कर दिया है। इसकी शुरूआत पहले विपक्ष की तरफ से हुई। कहा गया कि भाजपा और एनडीए को 4 सौ पार का बहुमत इसलिए चाहिए कि देश के संविधान को बदला जा सके। हालांकि कोई यह बताने की स्थिति में नहीं है कि संविधान बदलने का निश्चित अर्थ और विषयवस्तु क्या है। संविधान में संशोधन का प्रावधान पहले ही से है। संविधान के मूल ढांचे में बदलाव नहीं किया जा सकता, यह कोर्ट का फैसला है। अगर भाजपा इसे बदलना भी चाहे तो क्या बदलेगी? दबी जबान से यह बात फैलाई जा रही है कि संविधान नए सिरे से लिखा जाने वाला है, जो मनुस्मृति पर आधोरित होगा। लेकिन जब यह देश ईवीएम से बैलेट पेपर पर वापस जाने के लिए तैयार नहीं है तब संविधान को ढाई हजार साल पुरानी मनुस्मृति के आधार पर पुनर्लेखन की बात महज सियासी शोशेबाजी है। दूसरा डर है आरक्षण खत्म करने का। भाजपा भारी बहुमत में आएगी तो आरक्षण का खत्म होगा। खासकर दलितों और आदिवासियों का। यह भी देश के लोकतांत्रिक तकाजों और विवशताओं के चलते असंभव है। इसके पहले विपक्षी दल अल्पसंख्यकों और खासकर मुसलमानों को सीएए और एनआरसी पर डराते आ ही रहे हैं। जबकि सीएए तो नागरिकता छीनने का नहीं, देने का कानून है। मकसद यही कि किसी तरह वोटों की गोलबंदी मजबूती से हो। दूसरी तरफ विकास और देश को विश्वगुरू बनाने के दावे अब आर्थिक न्याय-अन्याय के बीहड़ों में छटपटाते नजर आ रहे हैं। इसकी शुरूआत तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ही की। उन्होंने कांग्रेस घोषणा पत्र में आर्थिक समानता के वादे को उलटाते हुए मतदाताओं और खासकर हिंदू मतदाताओं को डराया कि कांग्रेस सभी का आर्थिक सर्वेक्षण कराके तमाम हिंदुओं की सम्पत्ति हड़प कर मुसलमानों में बांट देगी। क्या यह संभव है? जब 600 साल के मुस्लिम शासन में यह मुमकिन न हो सका तो कांग्रेस जो खुद ही अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही है, 80 फीसदी हिंदुओं की सम्पत्ति छीनकर मुसलमानों को बांटने का क्या खाकर दुस्साहस करेगी और क्या हिंदू ऐसा होने देंगे? प्रधानमंत्री ने इस सम्पत्ति के बंटवारे में मंगलसूत्र का इमोशनल धागा भी पिरोया कि कांग्रेस पावर में आई तो सधवाओं के मंगलसूत्र भी छिन जाएंगे। हिंदू विवाहित महिलाओं द्वारा सुहाग के प्रतीक मंगल सूत्र पहनने की प्रथा देश में मुख्य रूप से महाराष्ट्र और कर्नाटक में है। गुजरात में भी हो सकती है, लेकिन देश के बाकी हिस्सों में विवाहित महिलाएं आमतौर पर सोने की चेन, जिसमें पेंडेंट लटका होता है, ही पहनती हैं। इसलिए मंगलसूत्र बचाने की अपील कितनी कारगर होगी, कहना मुश्किल है। इसी तरह मामला 'विरासत कर' का भी है। अमेरिका के कुछ राज्यों में प्रचलित विरासत कर (इनहेरिटेंस टैक्स) भारत में लागू करने का सुझाव अमेरिका में रह रहे कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने दिया था। जबकि कांग्रेस ने इससे खुद को अलग कर लिया है। लेकिन भाजपा इस सुझाव को भी कांग्रेस के 'संकल्प' के रूप में पेंट कर रही है। इस देश में लोग अमूमन सामान्य कर भी देने में आनाकानी करते हैं, वो विरासत कर जैसा काल्पनिक कर देने की उदारता क्योंकर दिखलाएंगे?

जाहिर है कि चुनाव प्रचार अब जमीनी मुद्दों के बजाए हवाई मिसाइल अटैक पर ज्यादा फोकस होता जा रहा है। ये ऐसी बातें हैं, जिनका आम मतदाता की जिंदगी और आकांक्षाओं से खास सम्बन्ध नहीं है। भाजपा यह जताने की कोशिश कर रही है कि कांग्रेस का राज मतलब मुसलमानों की हुकुमशाही तो भाजपा को फिर से सत्ता सौंपने का अर्थ हिंदुओं की तानाशाही है। यानी पूरा नरेटिव अर्ध सत्य पर चल रहा है। अगर तीसरे चरण में भी मतदान का औसत नहीं सुधरा तो हमे सियासत के और घटिया तथा भ्रामक नमूने देखने को मिल सकते हैं। जो सत्ता की रस्साकशी में जो हो रहा है, वह कम से कम लोकतंत्र के लिए स्वास्थ्यप्रद कतई नहीं है। आगे-आगे देखिए, होता है क्या?

कमलनाथ बोले- हमेशा से आरक्षण विरोधी रही है भाजपा

कांग्रेस पर लगा रही झूठे आरोप,चुनाव से पहले खुद को बता रहे ओबीसी समर्थक

भोपाल। लोकसभा चुनाव 2024 में ओबीसी आरक्षण का मुद्दा छाया हुआ है। इस कारण आरक्षण के मामले पर एक बार फिर सियासत शुरू हो गई है। कांग्रेस और बीजेपी के नेता एक दूसरे को आरक्षण विरोधी बताने में जुटे हुए हैं। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा है कि मध्य प्रदेश में पिछड़ा वर्ग को 27 फीसदी आरक्षण उनकी सरकार ने दिया था। अब चुनावी समय में बीजेपी आरक्षण मामले में कांग्रेस पर झूठा आरोप लगा रही है। कमलनाथ ने अपने सोशल साइट एक्स पर लिखा कि भारतीय जनता पार्टी का चरित्र हमेशा से आरक्षण विरोधी रहा है। मध्य प्रदेश में मेरे मुख्यमंत्री कार्यकाल में अन्य पिछड़ा वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण दिया गया था। लेकिन लोकतांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकार गिराकर बनी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने षड्यंत्रपूर्वक ओबीसी को मध्य प्रदेश में दिये गये 27 प्रतिशत आरक्षण को समाप्त करा दिया। कमलनाथ ने आगे लिखा कि अब लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी के नेता खुद को आरक्षण समर्थक बता रहे हैं और कांग्रेस पर बेबुनियाद झूठे आरोप लगाने की कोशिश कर रहे हैं। जनता को यह सच्चाई बहुत अच्छी तरह से समझना चाहिए कि 1947 में देश की आजादी के बाद से कांग्रेस पार्टी ने ही आरक्षण की व्यवस्था लागू की और समय समय पर इसका दायरा वंचित समुदाय के लिए बढ़ाया। वहीं, भाजपा का चरित्र आरक्षण विरोधी हैं और उन्होंने कभी आरक्षण देने का काम नहीं किया, बल्कि मध्य प्रदेश और अन्य जगहों पर आरक्षण छीना है। इसलिए इस चुनाव में भाजपा के झूठ और पाखंड से सावधान रहिए और सच्चाई का साथ दीजिए।

भाजपा कार्यकर्ताओं की पार्टी, कार्यकर्ता ही संगठन को चलाते हैं : हितानंद

झाबुआ। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने सोमवार को झाबुआ, थांदला और पेटलावद विधानसभा क्षेत्र की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि देश में जितने भी दल राजनीति में सक्रिय हैं, उनमें से भारतीय जनता पार्टी सबसे अलग दल है। हमारे लिए राष्ट्र सर्वोपरि होता है। भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं पर आधारित दल है, कार्यकर्ता ही संगठन को चलाते हैं। आज कार्यकर्ताओं की बदौलत ही भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन सका है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने हमें हर बूथ पर 370 वोट बढ़ाने का जो लक्ष्य दिया है, उसे पूरा कर श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को सच्ची श्रद्धांजलि देना है। उन्होंने कहा कि हमें पन्ना प्रभारियों को और सक्रिय कर अधिक से अधिक मतदान कराना है।

प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अन्य दलों के नेता लगातार भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। आज देश और प्रदेश में कांग्रेस पार्टी में भगदड़ मची हुई है। देश और प्रदेश से खोखली हो चुकी कांग्रेस को जिले से भी पूरी तरह समाप्त करना हमारा कर्तव्य है। हमारा हर कार्यकर्ता भारतीय जनता पार्टी का निष्ठावान सिपाही है। पार्टी और विचारधारा के लिए हर कार्यकर्ता दिन-रात सक्रिय रहता है। हमें हर बूथ पर 370 नए मतदाताओं को पार्टी से जोड़ने का कार्य करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किए जा रहे गरीब कल्याण व जनहितैषी कार्यों को जनता तक पहुंचाएं और अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने की अपील करें। हमें अपने-अपने बूथ को ऐतिहासिक मतों से जीतने के लिए जुटना है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के परिश्रम के बल पर भारतीय जनता पार्टी लोकसभा चुनाव में प्रचंड जीत हासिल करेगी।

प्रदेश में अगले दो चरण में वोटिंग परसेंट बढ़ाने चलेगा अभियान

17 लोकसभा सीट पर वोटिंग बढ़ाने सीईओ एमपी फिर करेंगे बैठक

भोपाल। पहले और दूसरे चरण की 12 लोकसभा सीट पर मतदान प्रतिशत में लगातार आई गिरावट ने चुनाव आयोग के अफसरों की चिंता बढ़ा दी है। इसलिए अब चुनाव आयोग के निर्देश पर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी (सीईओ) 17 लोकसभा सीट पर वोटिंग बढ़ाने कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों की सोमवार को फिर बैठक लेने वाले हैं। सीईओ अनुपम राजन कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक से साथ सीईओ जिला पंचायत के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग करने वाले हैं जिसमें एक मई और सात मई को चलाए जाने वाले चलें बूथ की ओर अभियान की प्लानिंग और उसे मतदाताओं के बीच एग्जीक्यूट कराने पर बात होगी। प्रदेश में अंतिम दो फेज के चुनाव में वोटिंग बढ़ाने के लिए मतदाताओं को मतदान केंद्र तक चुनाव आयोग द्वारा चलें बूथ की ओर अभियान चलाने का फैसला किया गया है। इसके लेकर तीन दिन पहले मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कलेक्टरों से कहा था कि प्रदेश में तीसरे और चौथे चरण का मतदान 7 मई एवं 13 मई को है। मतदान प्रक्रिया में अधिक से अधिक लोगों को मतदान हेतु प्रेरित करने के लिए चलें बूथ की ओर अभियान हर मतदान केन्द्र पर चलाया जाए। राजन ने

कहा कि तीसरे चरण के लिये यह अभियान एक मई एवं चौथे चरण के लिये 7 मई को चलाएं। सीईओ ने अफसरों को निर्देश दिए हैं कि अभियान के अंतर्गत हर मतदान केन्द्र पर बूथ जागरुकता समूह (BAG) के सदस्यों, कैम्पस एम्बेसडर, रहवासी कल्याण समिति (RWAs), चुनावी साक्षरता क्लब (ELCs), गैर सरकारी संगठन (NGOs), चुनाव पाठशाला तथा स्थानीय लोगों जागरुक करने के साथ उन्हें वोट डालने के लिए उत्प्रेरित करना है। कलेक्टरों से कहा गया है कि इसके माध्यम से सघन स्वीप गतिविधियां आयोजित कर लोगों को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिये प्रेरित करने की कार्यवाही करें। इन गतिविधियों के फोटोग्राफ्स एवं वीडियो भी मांगे गए हैं। तीसरे चरण में प्रदेश के 9 लोकसभा क्षेत्रों में मतदान होना है। इसके अंतर्गत आने वाले 20 हजार 456 मतदान केंद्रों पर यह अभियान चलाया जाएगा। इसमें बैतूल, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल और राजगढ़ लोकसभा क्षेत्र शामिल हैं। चौथे चरण में प्रदेश के 8 लोकसभा क्षेत्रों के 18 हजार 7 मतदान केंद्रों पर यह अभियान चलाया जाएगा। इसमें देवास, उज्जैन, मंदसौर, रतलाम, धार, इंदौर, खरगोन, खंडवा लोकसभा क्षेत्र शामिल हैं।

भोपाल-देवास रोड को 6 या 8 लेन करने की तैयारी

पंडित प्रदीप मिश्रा के कुबेरेश्वर धाम के जाम से छुटकारा पाने 100 करोड़ से बनेंगे तीन फ्लाईओवर

भोपाल। कुबेरेश्वर धाम में पं. प्रदीप मिश्रा की कथा और मेले के दौरान लगने वाले जाम का समाधान सरकार को 100 करोड़ रुपए का पड़ने वाला है। भोपाल-देवास हाईवे को 6-लेन या 8-लेन करने की तैयारी है। इस पर 3 फ्लाईओवर बनेंगे। सबसे बड़ा फ्लाईओवर कुबेरेश्वर धाम पर एक किमी लंबा होगा, जिसमें सिर्फ पिलर्स पर लंबाई एक किमी होगी। फिर इसके दोनों तरफ 300-300 मीटर का ढलान होगा। साथ ही एक-एक किमी की सर्विस लेन भी दोनों तरफ बनेगी। बाकी के दोनों फ्लाइओवर कोलू खेड़ी वाला 400 मीटर लंबा और खजूरी सड़क का 800 मीटर लंबा होगा। कुबेरेश्वर धाम वाले फ्लाइओवर को विशेष महत्व देकर ऐसा डिजाइन तैयार किया गया है कि पं. मिश्रा की कथा में जाने वाले वाहन भोपाल-देवास मुख्यमार्ग पर नहीं होंगे। वे सर्विस लेन की तरफ डायवर्ट हो जाएंगे। यदि कोई फ्लाइओवर पर चढ़ गया तो दूसरी तरफ जाकर ही उतरेगा। ऐसा इसलिए किया जा रहा है कि हर कथा में 10 लाख से अधिक लोग पहुंचते हैं। फरवरी 2023 में ही 7 दिन की कथा में 20 लाख श्रद्धालु पहुंच गए थे। बहरहाल, कुबेरेश्वर धाम के साथ ही भोपाल-देवास के 141 किमी मार्ग को फ्री-वे किया जाएगा। इस पर 30 व्हीकुलर अंडर पास भी बनेंगे। अमलाहा (3.60 किमी) और कोठरी (5.70 किमी) पर मौजूदा रोड के अलावा बायपास बनेगा। सड़क विकास निगम ने इसका प्रारंभिक प्रस्ताव तैयार कर लिया है। मौजूदा प्रस्ताव में हर किमी को छह लेन करने व सर्विस रोड पर 35.51 करोड़ रुपए खर्च होंगे। आंकलन किया गया है कि 100 से 120 किमी की रफ्तार से गाड़ी चलती है तो भोपाल से देवास पहुंचने पर करीब ढाई घंटे लगते हैं। यह समय घटकर दो घंटे हो जाएगा। अनुमान है कि अगले 20 साल में भोपाल-देवास रोड पर ट्रैफिक 5-6 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा। इसीलिए अभी से मौजूदा फोर लेन मार्ग को 8-लेन करने पर विचार होगा। इसे बीओटी पर बनाने पर विचार है। मौजूदा फोर लेन भोपाल-देवास कॉरीडोर बीओटी पर 2033 तक के लिए दिया गया है। इसे 8-लेन बीओटी मॉडल पर बनाते हैं तो नए टोल प्लाजा बनेंगे। ऐसे में पुरानी एजेंसी के बारे में निर्णय करना होगा। रोड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन परीक्षण कर रहा है। सड़क विकास निगम ने अभी 6-लेन रोड का प्रारंभिक प्रस्ताव बनाया है। लेकिन, कोशिश की जा रही है कि इस प्रारंभिक प्रस्ताव को ही 8-लेन में अपग्रेड कर दिया जाए। आचार संहिता के बाद यह बदलाव हो सकता है। इसके पीछे बड़ी वजह है कि जमीन की उपलब्धता। छह लेन में 52.275 हेक्टेयर जमीन अधिग्रहित करनी पड़ेगी। इसमें 4.50 हेक्टेयर फॉरेस्ट लैंड का डायवर्सन भी होगा। 8 लेन करते हैं तो और जमीन की जरूरत होगी।

प्रदेश के सभी जिलों में अब लगेगा पुस्तक मेला

स्कूल शिक्षा विभाग ने कलेक्टर्स को लिखा पत्र, निजी स्कूलों की मनमानी पर लगेगी रोक

भोपाल। एमपी के निजी स्कूलों, किताब बेचने वालों और दुकानदारों के बीच की साठगांठ के खत्म करने के लिए जबलपुर जिला प्रशासन ने एक पहल की थी। इस पहल में जिला प्रशासन ने बुक मेले का आयोजन किया, यह आयोजन इतना सफल रहा की अब इसे एमपी के कई और जिलों में आयोजित करने का फैसला लिया जा रहा है। इससे गरीब और मिडिल क्लास परिवारों को निजी स्कूलों और दुकानदारों की मनमानी से राहत मिलेगी। जानकारी के लिए के बता दें, कि स्कूल शिक्षा विभाग ने पुस्तक मेला आयोजन को लेकर एमपी

के विभिन्न जिलों के कलेक्टरों को आदेश दिया है। अब एमपी के हर जिले में पुस्तक और यूनिफार्म मेले आयोजित किए जाएंगे। ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गरीब और मिडिल क्लास माता-पिता उचित मूल्य पर किताबें और स्टेशनरी खरीद सकें। जबलपुर में आयोजित पुस्तक मेले की सफलता के बाद एमपी के सभी जिला कलेक्टरों को शिक्षा विभाग ने लिखित निर्देश जारी किया है । स्कूल शिक्षा विभाग ने अपने पत्र में जिला कलेक्टरों को निर्देश दिया है कि यदि उनके जिले में निजी स्कूलों, प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की मिलीभगत के कारण छात्रों और अभिभावकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, तो इसका आकलन करने के बाद पुस्तक मेले का आयोजन किया जाए। आयोजन के लिए प्रत्येक जिले में स्थानीय परिस्थितियों, उपयुक्त स्थानों का यथाशीघ्र चयन किया जाना चाहिए। इससे पहले जबलपुर जिला कलेक्टर दीपक सक्सेना की पहल पर 10 अप्रैल से 14 अप्रैल के बीच शहर के गोल बाजार स्थित शहीद स्मारक पर पुस्तक मेले का आयोजन किया गया था। मेले का उद्देश्य स्कूली बच्चों और उनके अभिभावकों को निजी स्कूलों की मनमानी से राहत दिलाना है। इसके साथ ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिस्पर्धी एवं न्यूनतम मूल्य वाली किताबें, कॉपियां गरीब और जरूरतमंद परिवारों को उपलब्ध कराना है। कलेक्टरों को मेलों के आयोजन में चुनावी आचार संहिता का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिये गये हैं। पुस्तक मेले में प्रकाशकों की पुस्तकों के साथ-साथ अन्य जरूरी सामग्री भी उपलब्ध हो, ताकि सभी चीजें उचित और न्यूनतम दरों पर एक ही स्थान पर मिल सके। इस कार्यक्रम के लिए विश्वविद्यालयों को भी स्टॉल लगाने के लिए आमंत्रित करने का प्रस्ताव है।

तीन पीढ़ी, एक परिवार और 14 सिंगर्स

● एक मंच पर एक साथ देंगे प्रस्तुति, ऐसा न कभी देखा और न सुना

भोपाल। डॉक्टर का बेटा डॉक्टर, इंजीनियर का बेटा इंजीनियर, कारोबारी की पीढ़ी व्यापारी और अब तो नेताओं की पीढ़ियां भी सियासत में नजर आती हैं। इस परंपरा में निरंतरता कम ही दिखाई देती है। लेकिन, राजधानी भोपाल में एक ऐसा परिवार भी मौजूद है, जिसकी 3 पीढ़ियां संगीत से जुड़ी हुई हैं। संगीत और सुरों की सेवा कर रहे इस परिवार के एक, दो या तीन, चार नहीं बल्कि पूरे 14 लोग इससे जुड़े हैं। सुखद संयोग यह है कि यह सभी 14 सिंगर्स एक ही मंच पर आकर सुरों की प्रस्तुति देने वाले हैं। राजधानी के संगीत प्रेमियों के लिए यह सुरमय पल एकत्रित करने की तैयारी कला समूह भोपाल ने की है। संस्था के राजेश भट ने बताया कि कला समूह भोपाल संगीत के आयोजन करने में भोपाल की अग्रणी सांस्कृतिक संस्था

है। संस्था लिनियेज श्रृंखला का दूसरा संस्करण आयोजित करने वाली है, जिसमें एक ही परिवार के 14 सिंगर्स एक साथ प्रस्तुति देंगे। राजेश भट ने बताया कि संगीत परम्परागत रूप से अनेक परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। विरासत में मिले इस अनुपम उपहार को नई पीढ़ी के युवा अपनी मेहनत और समर्पण से संवारते और निखारते हैं। ऐसे ही एक परिवार की तीन पीढ़ियों के 14 सिंगर्स एक साथ एक मंच पर अपने हुनर का प्रदर्शन करेंगे। आयोजन 2 जून को स्थानीय कुक्कुट भवन में शाम 7 बजे शुरू होगा। उन्होंने बताया कि कला समूह भोपाल और हॉउस ऑफ म्युजिक द्वारा आयोजित श्रृंखला 'लीनिएज' के अंतर्गत रुद्रम्स बाय भट्स के कलाकारों की ये प्रस्तुति भोपाल के संगीत प्रेमियों के लिए निशुल्क है। उल्लेखनीय है कि रुद्रम्स बाय भट्स ग्रुप में एक ही परिवार के सिंगर्स हैं, जो इंदौर, मुंबई, पुणे, भोपाल, नागदा, सूरत शहरों में रहकर ही ऑनलाइन कार्यक्रमों की तैयारी करते हैं। इस ग्रुप ने अनेक शहरों में और कोरपोरेट ग्रुप्स में प्रोग्राम देकर खासी लोकप्रियता हासिल की है। 'लीनिएज' यानी परम्परा श्रृंखला के अंतर्गत कला समूह का यह दूसरा आयोजन है। विगत फरवरी में श्रृंखला का पहला आयोजन शास्त्रीय संगीत के परम्परा पर आधारित कार्यक्रम किया गया था, जिसमें देश के चार महानगरों से प्रतिष्ठित कलाकारों को आमंत्रित किया गया था। कला समूह के राजेश भट ने बताया कि एक ही परिवार के 14 सिंगर्स को एक ही मंच पर सुनना भोपाल वासियों के लिए यादगार अनुभव रहेगा।